एक जहान ऐसा भी

(कविता-संग्रह)

डॉ. जहान सिंह 'जहान'

त्र्यम्बक प्रकाशन
कानपुर

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। लेखक एवं प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुन:प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

I.S.B.N. : 978-93-92095-04-7

पुस्तक	:	**एक जहान ऐसा भी** (कविता-संग्रह)
लेखक	:	**डॉ. जहान सिंह 'जहान'**
संस्करण	:	प्रथम, सन् **2021**
मूल्य	:	₹ 150.00 मात्र
प्रकाशक	:	**त्र्यम्बक प्रकाशन** 109/408-बी, नेहरू नगर, कानपुर - 12 मो. : 9336832305
सर्वाधिकार	:	लेखकाधीन
मुद्रक	:	आर.बी. ऑफसेट, कानपुर
आवरण	:	डॉ. राव विक्रम सिंह
शब्द सज्जा	:	अम्बुज ग्राफिक्स, आर. के. नगर, कानपुर

EK JAHAN AIYSA BHI
(Kavita-Sangrah)
by – *Dr. Jahan Singh 'Jahan'*
Price : Rs. One Hundred Fifty Only

समर्पण

पूज्यनीया माताजी स्व. अशर्फी देवी

माँ

माँ तुम जीवन हो
निर्मल, निश्छल नितप्रति हो
धरती पर पहला प्यार और
आकाश हो
जीवन में नव जीवन की आस हो
माँ तुम इस 'जहान' का विश्वास हो।

समर्पण

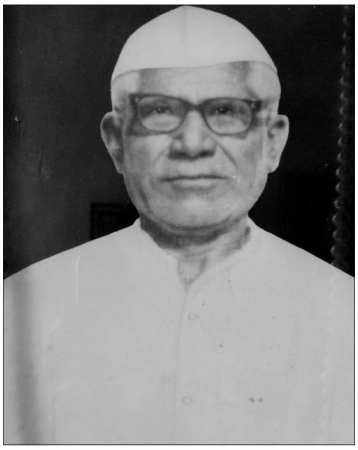

पूज्यनीय पिताजी स्व. चौधरी राम सिंह जी

बाप

उंगली पकड़ चलना सिखाया
कंधा चढ़ा मेला दिखाया
गोदी उठा झूला झुलाया।
मेरा हर सपना पूरा कराया।
इसी हौंसले को 'बाप' कहते हैं।
मेरी मुस्कान में आपकी जान रहती है।
तो आपसे ही मेरी दुनिया में शान रहती है।
मेरे बादशाहत के जलबे तेरे इर्द-गिर्द रहते हैं।
इसी शहनशाह को 'बाप' कहते हैं।

समर्पण

पूज्यनीय ताऊ जी स्व. चौधरी गोकुल प्रसाद

जीवन

सहज सरल जीवन जीने में
कितनी गणित लगाते हो।
जीवन के अन्तकाल में रोते और पछताते हो।
कुंठित मन की कुंठा लेकर क्या-क्या कर जाते हो।
राग, द्वेष, हानि-लाभ के चक्कर में
क्यों इतना थक जाते हो।
रोते रोते सोते हो और जगते ही रो जाते हो।
सहज, सरल जीवन जीने में
कितनी गणित लगाते हो।

कविता कला के साथ बढ़े चलो, बढ़े चलो

ईश्वर की अनुकम्पा से ही व्यक्ति में संगीत, वाद्य, नृत्य, चित्रकला, मूर्तिकला, काव्य, नाटक, कहानी, कथा साहित्य आदि विधाओं के प्रति रुझान बनता है और रुचि के अनुरूप व्यक्ति उसमें रच-बस जाता है, उसमें लेखन व उसकी प्रस्तुति का भाव उसे एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व के रूप में इंगित करता है, पहचान दिलाता है और प्रयास करते-करते वह इस कदर चर्चा में आता है कि समाज में उस व्यक्ति के प्रति आदर, सम्मान, स्नेह का सहज ही भाव बन जाता है जिसका वह पात्र बन जाता है, स्थापित हो जाता है।

डॉ. जहान सिंह 'जहान' के अध्ययन, अध्यापन में रसायन विज्ञान की रुचि के साथ-साथ ही आप पी.पी.एन. डिग्री कॉलेज में प्राचार्य पद की गरिमा लिये हुये सेवा मुक्त हुये, आप महत्वपूर्ण एवं गरिमापूर्ण व्यक्ति हैं। प्रभु की कृपा से विद्यालय में अध्ययन व अध्यापन काल में सेवाकार्य करते-करते आपमें ड्राइंग, पेंटिंग की रुचि जगी-बढ़ी और आपने अपने शौक के लिए अनेकों पेंटिंग बनाई हैं, साथ में काव्य के प्रति रुझान लेखनीय प्रक्रिया में पारंगत होते गये तभी यह कह सकते हैं कि यह दोनों अभिरुचियाँ एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। जिस प्रकार चित्रकार या मूर्तिकार चित्र/मूर्ति में रंगों का प्रयोग जब करता है तब उसे बड़ी कुशग्रता के साथ उचित रंग का निर्णय लेना होता है कि कहाँ कौन-सा रंग उपयुक्त होगा। डॉ. जहान सिंह 'जहान' के काव्य की भी यही विशेषता है कि अपने मनोभावों को शब्दों में किस तरह पंक्तिबद्ध किया जाये कि वह भाव कविता का स्वरूप पा सके, आपने अपने बुद्धि कौशल से उसे काव्य का स्वरूप प्रदान किया है। छन्दमुक्त कविता के ताना-बाना को आपने अपने काव्य क्षेत्र के लिए चुना। आपमें एक विशेषता यह भी है कि

समय के अनुरूप काव्य सृजन भी सहज ही कर लेते हैं, जिससे जनमानस को विशेष सुख मिलता है अच्छा लगता है। आपके संदर्भ में लिखते-लिखते अनायास किसी फिल्म के गीत की पंक्ति-

''ना ना करके प्यार तुम्हीं से कर बैठे
करना था ....''

याद आई और उसे भी यहाँ अंकित कर दिया, शायद यह भी ईश्वरीय इच्छा है, कोई संदर्भ बनता है या नहीं प्रभु ही जाने।

आपने बहुत सी कवितायें लिखीं, इतनी कि दो पुस्तकें तो सहज रूप से एक साथ आ सकती हैं फिर भी तीसरी पुस्तक के लिए रचनायें बच रहेंगी। हम आभारी हैं डॉ. जहान सिंह जी के कि इन्होंने अपने सहृदय मित्रों का आग्रह स्वीकार किया व रचनाओं को पुस्तकाकार रूप में लाने का मन बनाया। डॉ. जहान सिंह जी एक-एक पुस्तक काव्य जगत में लाना चाहते हैं, डॉ. साहब में हौंसला बहुत है। उनके हौंसले व सामर्थ्य को साधुवाद। डॉ. जहान सिंह जी की यह प्रथम कृति है, आशा है दूसरी भी शीघ्र हम लोगों के बीच होगी।

एक रचना प्रक्रिया में काफी समय लगता है उसमें रस, लय, छन्द, उपयोगिता, संदेश आदि कई बिंदुओं को दृष्टि में रखना होता है। रचना जनप्रिय होगी, लालित्यपूर्ण होगी वही हृदयवान श्रोताओं को प्रिय होगी। तभी कवि का उत्साहवर्धन होगा। ऐसा भी देखने में आता है कि अब तो एक-एक दिन में कई-कई रचनायें लोग लिख लेते हैं, पढ़ लेते हैं, हमारे मध्य ऐसे भी रचनाकारों की कमी नहीं है। खैर... सब समय-समय की बात है। डॉ. जहान सिंह 'जहान' की रचनायें पत्र-पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में छपी हैं, आपने समय-समय पर काव्य गोष्ठियों/समारोहों में रचनाओं का पाठ भी किया है, लोगों ने सुना व सराहा है।

कहा जाता है कि व्यक्ति को अपने आपको जानना चाहिए, अपने अंतस में झांकना चाहिए विचार करना चाहिए। डॉ. जहान सिंह 'जहान' ने अपनी प्रथम काव्य कृति का नाम भी ऐसा रखा कि जिससे उक्त कथन की सार्थकता सिद्ध हो। इसीलिए कृति का नाम 'एक जहान ऐसा भी' रखा गया।

आपकी यह 'एक जहान ऐसा भी' प्रथम कृति है आपको सहर्ष बधाई, आपकी रचनाओं का काव्यजगत में मान व सम्मान बढ़े, लोग सराहें व उससे प्रेरणा लें यही हमारी शुभकामना है। यही कविता का उद्देश्य भी है, कृति को सम्मान मिले क्योंकि शब्द बोलते हैं। इति....

आपका शुभेक्षु

- विनोद त्रिपाठी

संस्थापक 'विकासिका'

(सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था)

आचार्य नगर, कानपुर

मोबा. : 9838773003

अभिमत

'एक जहान ऐसा भी' भले ही डॉ. जहान सिंह 'जहान' की प्रथम कृति है। भले ही डॉ. जहान रसायन विज्ञान के विद्यार्थी होने के नाते हिन्दी साहित्य की विविधताओं, विधाओं एवं व्याकरण की गहराइयों से विज्ञ न रहे हों, भले ही कृति में समावेश की गयी उनकी अधिसंख्य रचनायें 'अतुकांत' हों पर कृति की एक-एक रचना मन में छू लेने वाली है। अंतर्मन को झकझोरने वाली हैं।

निश्चेतन काव्य विधा में व्याकरण के मानकों का अपना महत्व है पर किसी कृति की सफलता का मानदण्ड सिर्फ व्याकरण में मानक ही नहीं होते। कृति वही सफल मानी जाती है। वही सफल होती है जो पाठक के मानदण्डों पर खरी उतरती हो। उतरने में सफल हो।

वस्तुत: काव्यसृजन का वृहद प्रयोजन राष्ट्र, समाज के हितों से जुड़ा होना चाहिए, यदि ऐसा नहीं होता तो वो सृजन न तो पाठकों के मन पर स्थायी छाप छोड़ने वाला सिद्ध हो सकता है और न ही उस कृति का दीर्घकालीन महत्व होता है।

''इस दृष्टि से भी रचनाकार डॉ. जहान की रचनायें खरी उतरती हैं।''

डॉ. जहान ने काव्य संग्रह 'एक जहान ऐसा भी' में कुल 82 रचनायें संकलित हैं जो विविधता से पूर्ण हैं। सच तो यह है कि उन्होंने समाज से जुड़े हर प्रश्न का उत्तर ढूंढ़ने की कोशिश की है।

'माँ', 'बाप कभी मरता नहीं' और 'बेटा' शीर्षक में लिखी कविताओं में रचनाकार ने अपने जीवन के अनुभवों को जिस प्रयोजन से साझा किया है वो लगभग हर व्यक्ति के जीवन की सच्चाई है।

रचनाकार ने 'मैं किताब हूँ' शीर्षक से लिखी कविता में 'किताब' की महत्ता स्थापित करके एक प्रकार से 'किताब' से दूरी बनाने वालों में किताबें पढ़ने को उत्प्रेरित, उत्साहित करने का ही सद्प्रयास किया है। जरा गौर करें इन पंक्तियों को –

वक्त की रसीद
इतिहास की गवाह।
समय का आकार
काल चक्र का हिसाब हूँ
मैं किताब हूँ।

'कवियों संग मेरी यात्रा' शीर्षक में लिखी गयी कविता में कृतिकार ने कवियों के बारे में जो कुछ लिखा है वो न केवल 'यथार्थ' है वरन् प्रेरणास्पद भी है।

बाजारवाद पर रचित कविता ''हम कहाँ आ गये हैं?'' ''और जीवन के सत्य को प्रकट करतीं 'हर दम के लिए', विलाप' एवं 'कमाल है' जैसी रचनायें जीवन के मर्म को समझाती नजर आती हैं।

निःसंदेह कृति में समाहित प्रकृति से जुड़ी रचनायें कृति की अन्य रचनाओं पर भारी पड़ती दीखती हैं। ऐसी हर रचना पाठकों के मन को उद्वेलित करेगी ऐसा मेरा पूर्ण विश्वास है।

'मैं पार्क हूँ', 'पेड़ मैं चलना चाहता हूँ'', ''फूले पलास'', ''रास्ते के पेड़'' जैसी रचनाओं के क्रम में ''गुलाब'' नामक रचना दिल को छू लेने वाली है। प्रकृति की अद्‌भुत नैसर्गिक देन एक फूल ने किस तरह अपनी वेदना व्यक्त की है को मनुष्य की संवेदनहीनता को आइना दिखाती नजर आती है।

ऐसे ही कवि द्वारा प्रकृति की नियामत पशु-पक्षियों को लेकर लिखी गयी रचनायें बेहद मर्मस्पर्शी हैं। ''गाँव की फाख्ता शहर में'' शीर्षक से लिखी रचना, जहाँ शहर गाँव के अंतर का सटीक चित्रण है वहीं कवि ने कोरोना महामारी के प्रति भी बड़े कवि ने सचेत किया है। 'चिड़िया की शोक सभा' नामक रचना अंतर्मन को झकझोर देने वाली है। एक बेबश चिड़िया की मौत का जिस तरह कवि ने मातम मनाया वो कवि की पशु-पक्षियों के प्रति संवेदना ही दर्शाती है।

इसी क्रम में ''मेरे आंगन की गौरैया'', ''दरिंदे खो गये', 'बूढ़ा पेड़', कवितायें कहीं से कमतर नहीं आंकी जा सकतीं।

'विलाप' कविता के माध्यम से कवि ने जीवन के सच का दर्शन कराने का कितना सुंदर प्रयास किया है। देखें -

''कितने पुष्प दफन होंगे, पतझड़ के जाने तक।
कितने और पल्लवित होंगे फिर बसंत के आने तक।
करती कहाँ विलाप प्रकृति किसी के आने-जाने पर॥

कुल मिलाकर यदि यह कहा जाय कि डॉ. जहान ने अपने नाम के अनुरूप अपनी कृति में पूरे जहान को समेटने का प्रयास किया है तो कदाचित गलत न होगा।

डॉ. जहान की काव्यकृति का साहित्य जगत में
स्वागत हो, समालोचक उस पर कलम चलायें
समीक्षक समीक्षा करें और पाठक उसे
हाथों-हाथ लें यही कामना व अपेक्षा है।

- शिवशरण त्रिपाठी
सम्पादक 'दि मॉरल'
कराची खाना, कानपुर
मोबा. : 9450329077, 9450408309

शुभ-हित कामना

डॉ. जहान सिंह जी एक बहुआयामी व्यक्तित्व से परिपूर्ण विद्वान व्यक्ति हैं। मैं पूर्व में उन्हें केवल रसायन विज्ञान के व्याख्याता के रूप में जानता था। पी.पी.एन. कॉलेज के प्राचार्य पद से सेवानिवृत्त जीवन में श्री जहान सिंह जी का हिन्दी साहित्य से प्रेम और काव्य रचना में उनके समर्पण का रूप मेरे लिए एक आश्चर्य जैसा ही था। उनकी सादगी, प्रेमपूर्ण मेल-मिलाप, मधुर वाणी एवं सजहतापूर्ण व्यवहार उनका व्यक्तित्व है। उनका कलाप्रेम उनके द्वारा बनाई गई पेंटिंग में स्पष्ट झलकता है। ये सब मिलकर ही उनको बहुआयामी बनाता है। विनम्रता एवं समाज के प्रति सेवा भाव भी डॉ. जहान सिंह की विशेषता है।

डॉ. जहान सिंह द्वारा रचित लघु कविताएँ तो मैंने विभिन्न आयोजनों में सुनी हैं और सराहा भी है, अब उनका एक श्रेष्ठ काव्य-संग्रह देखकर मैं अन्तर्मन से प्रसन्न हूँ। उनकी कलम में मर्म भी है, माता-पिता, बड़ों का सम्मान भी झलकता है। उन्होंने बचपन से इस आयु तक जो कुछ भी देखा और महसूस किया है तथा दिल एवं मस्तिष्क के अनुभवों को इतने सहज, सरल रूप में अभिव्यक्त किया है कि उनकी कविता है दिल को भी छूती हैं और जीवन की पुरानी-नई स्मृतियों को ताजा कर देती हैं और जब कोई कविता दिल से निकलती है तो साहित्य के व्याकरण का कोई महत्व नहीं रहता। उनकी रचनायें पर्यावरण, मानव जीवन, पशु-पक्षियों, बनस्पति के नजदीक ले जाती हैं और भाव-विभोर भी करती हैं। ऐसा प्रतीत नहीं होता कि

यह उनका प्रथम प्रयास है, उनकी रचनाधर्मिता उन्हें परिपक्व कवि दर्शाती है। मेरी शुभकामनाएँ इस पुस्तक की सफलता के लिए तो हैं ही साथ ही मैं डॉ. जहान सिंह जी की अगली पुस्तक का भी इन्तजार करूँगा जो पाठकों को इसी प्रकार अभिभूत करे।

– इंजी. कृष्णकान्त अवस्थी
111ए/80 अशोक नगर, कानपुर
मोबा. : 9415178287, 9621100924

अपनी बात

'एक जहान ऐसा भी' मेरा प्रथम काव्य-संग्रह है। मेरी कविता की इस पुस्तक में प्राकृतिक सौंदर्य, रिश्तों की मिठास एवं बेजुबान दर्द लिए हुए जैसे भी मन में भाव बने, मुक्त छंद के रूप में कागज पर अंकित कर दिये। मैंने इन रचनाओं को किसी रचनाधर्मी, मित्र को न दिखलाई न संशोधन की आवश्यकता समझी। वह इसलिए भी कि मेरे काव्यमन की अभी तक जो जैसी भी अभिव्यक्ति है सनद रहे। एक विशेष बात मैं अवश्य अवगत कराना चाहता हूँ कि मैं साहित्य का विद्यार्थी नहीं रहा, रसायन विज्ञान का विद्यार्थी रहा। मेरे अध्यापन कार्यक्षेत्र में भी रसायन विज्ञान विषय ही रहा है। यह सच है कि ड्राइंग, पेंटिंग का शौक रहा। कविता का भाव उसके बाद जागा, मैं स्वयं जानता हूँ कि यह काव्य-संग्रह मेरे लिए तो प्रारम्भिक निधि है, जिस तरह बचपन की यादों को व्यक्ति संजोये रखना चाहता है वैसे ही अपनी प्रारम्भिक काव्य मन की अनुभूतियों को सहेजने का यह प्रयास प्रथम पुष्प के रूप में है। प्रकृति की बगिया में तरह-तरह के रंग-बिरंगे पुष्प होते हैं, उसी प्रकार इस कृति में कुछ गेय रचनायें हैं, अधिकांश अतुकान्त रचनायें हैं।

मेरी जीवन-यात्रा में 5 वर्ष की अवस्था में पूज्यनीया माताजी का निधन हो गया। बचपन से 35 वर्ष पिता के सुरक्षा चक्र में जीवन बीता। मेरे जीवन के निर्माण में मेरे ताऊ जी का महत्वपूर्ण योगदान है वहीं मेरी बड़ी बहन की ममता की छाया मुझ पर अभी भी कायम है। इन दोनों विभूतियों से जीवन उऋण नहीं हो सकता।

मेरी जीवन संगिनी आदरणीया मिथलेश ने मुझे खुशियों भरा परिवार दिया है, मुझे हर चिन्ता से मुक्त रखा। मुझे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने में सदैव मेरा उत्साहवर्धन किया है। यह पुस्तक आप तक ला सका इसमें मेरे परिवार का बहुत योगदान है, मेरे पुत्र चि. जसवन्त सिंह बहू ईसा सिंह, पुत्र डॉ. राव विक्रम सिंह, बहू पूजा सिंह, पुत्री डिम्पल दामाद इं. ब्रिजेन्द्र कुमार, बड़ी बहन ऊषा यादव व श्री वीरेन्द्र जी, बड़े भाई श्री के.पी. सिंह व मेरे आत्मीय श्री महाराज सिंह के साथ ही श्री कैलाश चन्द्र यादव, श्री लक्ष्मीचन्द्र यादव, श्री योगेन्द्र यादव, रेनू मिढ्टा, इं. राजीव यादव, प्रीती, श्री रमेश भारती एवं रीतू व ग्रुप कैप्टन श्री आर.के. यादव (B.S.M.) के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ। साथ में प्रिय आकृति, यशवीर, रनवीर, उदय, यशवर्धन, अमर, समर, मोना, मीनू को अपना प्यार व आशीर्वाद देता हूँ।

मेरा अपना पी.पी.एन. महाविद्यालय परिवार, हरमिलाप मिशन, स्कूल परिवार के साथ मैं अपने अभिन्न मित्र इ. टी.सिंह, इं. देवेन्द्र सिंह, डॉ. आर.के. आर्या, डॉ. ए.के. अस्थाना, डॉ. एन.पी. सिंह, डॉ. डी.एन. बाजपेयी, श्री अखिलेश शुक्ल एवं डॉ. संदीप पाठक व मेरे छोटे भाई श्री राजबहादुर के प्रति अतिशय प्रसन्नता के साथ हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

मेरी साहित्यिक यात्रा के प्रमुख डॉ. विनोद त्रिपाठी (संस्थापक-विकासिका) को प्रथम नमन एवं डॉ. पी.एन. शर्मा, गीत गुंजन के सम्पादक श्री सर्वेश तिवारी, अनन्तिम के सम्पादक श्री सतीश गुप्ता, दि मॉरल के सम्पादक श्री शिवशरण त्रिपाठी तथा समाज व साहित्य सेवी श्री के.के. अवस्थी जी, डॉ. कमलेश द्विवेदी, डॉ. नारायणी शुक्ला, डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय, श्री हरिनारायण तिवारी, श्री नीलाम्बर कौशिक, श्री सुरेन्द्र 'सीकर', श्री रमेश मिश्र 'आनन्द', डॉ. राजीव रंजन पाण्डेय, डॉ. बाल गोविन्द द्विवेदी, श्री अशोक कुमार बाजपेयी, श्री सुरेश 'राजहंस', श्री वेद प्रकाश शुक्ल 'संजर', डॉ. सुधीर त्रिपाठी, श्री अनुज सिंह 'मनमीत', श्री देवेन्द्र सफल, श्री हरीलाल 'मिलन', श्री गोपाल खन्ना सहित पूरे साहित्यिक समाज का हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ।

मित्र मण्डली ऊर्जा का संचार तंत्र है, इसके बिना हर खुशी व उपलब्धि अधूरी है। सुधी पाठकों के कर-कमलों में यह कृति अर्पित करते हुए गौरवान्वित हूँ, परामर्श अपेक्षित है।

दिनांक : 24.2.2021

- डॉ. जहान सिंह 'जहान'
M.Sc., Ph.D., LL.B., D.D.E., C.I.C., German Language
117/178 A(1) Q-Block,
Sharda Nagar, Kanpur - 25
Mob. : 9307207065

अनुक्रमणिका

❖ माँ वीणा पाणि से 23
❖ कवि का पिंजरा 24
❖ मैं कुछ लिखता हूँ 25
❖ मैं पिंजरा हूँ 26
❖ मैं किताब हूँ 27
❖ बाप कभी मरता नहीं 29
❖ कवियों संग मेरी यात्रा 31
❖ गाँव की फाख्ता शहर में 33
❖ मैं पार्क हूँ 35
❖ पेड़ मैं चलना चाहता हूँ 37
❖ नारी तू, आज भी उदास है 39
❖ न जाने क्यों और जीना चाहते हैं 40
❖ पाती उनके नाम 42
❖ मैं मौन रहता हूँ 43
❖ चिड़िया की शोक सभा 45
❖ रास्ते के पेड़ 46
❖ बंजारा मन 47
❖ हम कहाँ आ गये हैं? 49
❖ फूले पलास 50
❖ माँ 51
❖ विलाप 52
❖ मेरे आँगन की गौरय्या 53
❖ मन 54
❖ प्रेम बोध 55
❖ हरदम के लिये 56

- आईना बाप का 57
- कमाल है 58
- तन्हा हूँ 59
- शाम, तेरी याद और मेरी तनहाई 60
- बस इतनी सी बात 61
- कितना अकेला 63
- शर्मीली शाम 64
- तुम और प्रेम दिवस 65
- अलग नहीं 66
- बचपन 67
- मेरी ही मुझसे बात 68
- बेटा 70
- कुछ न बदला 71
- संभल के! मशीन हूँ 72
- क्या खो गया? 74
- अन्तर जाल 75
- थके पैर और पहाड़ों का सफर 76
- गुलाब 77
- ये संसार निराला है 78
- करवट 79
- मिट्टी से खिलौने 80
- और हम पुराने हो गये 81
- दूसरी डायरी 82
- बन्धन 84
- संसार में संसार 85
- मेरा बसंत 86
- सूरज! इतना गुरूर 87
- वक्त का वक्त 88
- तन्हा-तन्हा 89
- रात क्यों जागती 90
- मेरी खिड़की का वो आसमान 91

- एक बार तो मुस्कराइये 92
- क्या तू सोचे? 93
- बन्द रास्ते 94
- वो शख्स 95
- आत्मनिर्भर 96
- तू मेरा मन 97
- अगर चल पड़े 98
- बगिया बसंत को दिल दे बैठी 99
- मेरे पंख 100
- थका हूँ हारा नहीं 102
- मेरा सावन कब आयेगा 103
- मैं डाकिया 104
- मदारी 105
- जिन्दगी जवान है 106
- परिन्दे खो गये 107
- बूढ़ा पेड़ 108
- मेरा गाँव आज भी गाँव है 109
- जीवन संगीत 111
- वक़्त जीना चाहता है 112
- वाह रे इन्सान 113
- मिल जाये तो क्या बात है 114
- कैसा सावन बिना पिया के 115
- पाठशाला 117
- जीवन वृत्त 118
- बस अब 119

माँ वीणा पाणि से

ज्ञान की देवी
हंस वाहिनी
माँ
तुम्हारी शरण में हूँ
काव्य की रीति–नीति
मर्म, तत्व
से अनभिज्ञ हूँ
फिर भी
साहस कर
भावों का
शब्द गुच्छ
लेकर
तेरे द्वारे आया हूँ,
इसे स्वीकार करो।
माँ वीणा पाणि
शरण में हूँ
आशीष दो
माँ
आशीष दो।

♦

कवि का पिंजरा

एक खंडहर में एक बच्चा रहता है।
जो अपने को कवि कहता है।।
अजब-गजब हरकतें करता है
दरवाजा पीटता, खिड़की तोड़ता
बाहर निकलना चाहता है।
अन्दर का बैन्टीलेटर छोड़
खुली हवा में सांस लेना चाहता है।
पन्नों के दबे बोझ से बाहर निकल
कुछ सुनना, सुनाना चाहता है।
वो अपने को कवि कहता है।
वो खण्डहर भी मैं हूँ
और बच्चा भी मैं

♦

मैं कुछ लिखता हूँ

नहीं जानता मैं क्या लिखता हूँ।
पर हाँ मैं कुछ लिखता हूँ
जो दिखा, वो लिखा।
ये बात और है कि चाटुकारों के बाजार में नहीं टिका।
दूध को दूध, पानी को पानी लिखा
दिन को रात, काले को सफेद नहीं किया मैंने।
बेईमान और झूठों से किया किनारा।
दुखियों की आवाज बना।
कमजोरों का बना सहारा।
रंग मेरे तीखे हैं।
वक्त की धुंध में भी दिखे है।
सच छिपता नहीं और झूठ टिकता नहीं
जो दिखता है कभी-कभी वो होता नहीं।
सच को दिखाने की कोशिश करता हूँ
नहीं जानता मैं क्या लिखता हूँ
पर हाँ मैं कुछ लिखता हूँ।

♦

मैं पिंजरा हूँ

तुम परिंदे हो जहाँ चाहो जा सकते हो।
मैं तो पिंजरा हूँ, कहाँ जाऊँगा!!
दिन-रात का साथ है।
हम ख्याल है जिन्दगी।
तुम अगर थक गये हो।
तो आराम से जा सकते हो।
तुम तो परिन्दे हो।
मुझे तुम धीरे-धीरे भूल जाना।
मैं भी तुम्हें धीरे-धीरे भुलाऊँगा।।
यादों को भुला भी दूँ।
पर दिल से न भूला पाऊँगा।
मैं तो पिंजरा हूँ, कहाँ जाऊँगा।
निकलोगे अकेले, अनजान सफर होगा।
अजनबी सज़र में कोई नहीं अपना होगा।
यादों को अपने पंख से कितना ढकेल पाओगे।
थक गये अगर, कहीं तो सुसताओगे।
बस्तियाँ रुकने पर माँगती हैं आई.डी.।
तुम अपना आधार कार्ड कैसे दिखा पाओगे।
अगर वो जिद्द करे तो कहना घर भूल आया हूँ
लौटने के रास्ते मिटाये नहीं हैं हमने अभी।
तुम परिन्दे हो, लौट के आ सकते हो।
मैं तो पिंजरा हूँ कहाँ जाऊँगा।

♦

मैं किताब हूँ

वक्त की रसीद
इतिहास की गवाह।
समय का आकार।
कालचक्र का हिसाब हूँ।
मैं किताब हूँ।
गीता के श्लोक
कुरान की आयतें।
गुरुवाणी के दोहे।
बाइबिल की हिदायतें।
वेद और पुराण हूँ।
मैं किताब हूँ।
कबीर की वाणी
राधा का प्यार
मीरा की भक्ति
द्रोपदी का अपमान
कृष्ण जैसा दोस्त
मैं महाभारत हूँ।
मैं किताब हूँ।
अल्कजैण्डर की तलवार
रोमियो-जूलियट का प्यार
हिटलर की भूख
बुद्ध का त्याग।
चंगेज खान की क्रूरता
कर्ण की दानवीरता।
मैं किताब हूँ।

♦

गरीब मजदूर की कुदाल।
बादशाहों की टकसाल
व्यापारियों सा माला माल
भूखी भिखारन का सपना।
दुखी नारी का संसार हूँ।
मैं किताब हूँ।
सूखा, बाढ़ महामारी
से मैं शर्मिन्दा हूँ।
महायुद्ध, धर्मयुद्ध से भी
मेरे पन्ने लाल हैं।
दुनिया का भ्रमण, चाँद की यात्रा
मुझमें समाई है।
नई-पुरानी दुनिया
की कहानी हमने सुनाई है।
मैं किताब हूँ।
अगर मुझ पर खून के धब्बे हैं
तो गीत-ग़ज़ल प्यार की रोशनाई भी है।
सिर के पास रख लोगों ने प्यार किया?
रद्दी में फेंक मेरा तिरस्कार भी किया
हर कठिनाई से गुजरी हूँ
पर मिटा नहीं मेरा बजूद
क्योंकि मैं किताब हूँ।
कुछ पन्ने खाली हैं।
कल के लिये
लिखना चाहे दास्ता प्यार की।
या फिर बेदना तलवार की।
वक्त तुम्हारा।
कलम तुम्हारी
मैं तो काल चक्र का हिसाब हूँ।
'जहान' मैं किताब हूँ।

♦

बाप कभी मरता नहीं

बाप कभी मरता नहीं
बच्चों को कभी छलता नहीं
वो तो अमर है।
जिन्दगी उसकी एक समर है।
कितना दुसवार है।
एक बाप का, बाप बना रहना
कितने मोड़ आते हैं।
हर मोड़ पर साथ खड़े रहना
वो पीछे कभी हटता नहीं
बाप कभी मरता नहीं.....
तुझे एहसास हो न हो
ये तेरी गफलत
वो तेरी हर गलती माफ करता है
रोना चाहता फिर भी रोता नहीं
बाप कभी मरता नहीं....
मैं जो मैं हूँ।
यथार्थ में वो तुम हो।
तुम कब मरे थे।
जो मरा था वो तो मैं था।
थका कितना भी हो।
तू कभी थकता नहीं
बाप कभी मरता नहीं.....
मैं बाप हूँ तुझे मरने नहीं दूँगा
जिस दिन तू मर जायेगा।
बाप का रिस्ता कौन निभायेगा।

बाप तो एक व्यवस्था है।
अस्त-व्यस्त तो हो सकती, पर समाप्त नहीं हो सकती।
सूरज कभी डूबता नहीं, बाप कभी मरता नहीं।
जिस दिन किसी बेटी की माँ
और बेटे का बाप मर जायेगा।
उस दिन यह संसार वीरान हो जायेगा।

♦

कवियों संग मेरी यात्रा

मैं कवियों संग मधुवन से गुजर रहा था।
कुछ घबराया और कुछ डर रहा था।
कौन कवि किसके पीछे पड़ जाये।
विनम्र निवेदन समझे बिना अड़ जाये।
उसका राशिफल चमके, मेरा बिगड़ जाये।
कविवर के द्वार, पट्टिका पर लिखा था।
अपनी सुरक्षा स्वयं करें।
सावन का महीना, जंगल हरा-भरा
खूब फल फूल रहा था।
घास तो घास पुराना ताड़ भी हिल रहा था।
घनी आबादी, पगडंडियाँ तंग।
साहित्य जीव जन्तुओं का हुड़दंग।
कुछ रसीले, कुछ कटीले, कुछ अति नुकीले।
कुछ वर्षों से गुमसुम कुछ अति प्राचीन
कुछ लिपटी नई लताओं का लेते आनन्द।
आने जाने वालों पर जाने-पहचाने छंद।
बड़ी रोमांचकारी है।
यह यात्रा
किसी कवि की कोयल सी मीठी बोली
कहीं सिंह की गर्जन
कहीं लोमड़ी की खिसियाहट
कहीं कउओं सी काँव काँव।
कहीं सुनहरे सपने और राजनीति के दाँब।
कहीं ज्ञान की वर्षा, कहीं दुनिया को गाली
कहीं भूख कहीं पतझड़, कहीं लहलहाते खेत

कहीं मिलन, कहीं आलिंगन, कहीं दुल्हन की डोली
कहीं बचपना, कहीं जवानी, कहीं मृत्यु भी रोली
इस तरह कवि की कविताओं का चलता रहा सिलसिला।
आँसू और मुस्कान लिये थक कर मैं चूर हुआ।
घर आने को मजबूर हुआ।
बिजटिंग रजिस्टर पर लिख कर आया।
आप ही बतायें कवि यात्रा कैसी रही।

♦

गाँव की फाख्ता शहर में

गाँव की फाख्ता शहर आई।
थोड़ी सकुचाई बहुत घबराई।
इमारत की टूटी खिड़की पर नई ग्रहस्थी बसाई।
सब कुछ नया, शहर अनजान।
न कोई जान-पहचान।
न बो किसकी मेहमान।
बस सुनहरे सपनों की पोटली
माँ और दो बच्चे।
वो भोले-भाले दिल के सच्चे।
सोचा था गाँव में क्या रखा है।
शहर में बच्चों को पढ़ायेंगे।
बड़ा अफसर बनायेंगे।
मजदूरी तो बहुत कर ली
बुढ़ापे में बैठ कर खायेंगे।
अभी-अभी लौटी माँ,
बहुत उदास, बहुत निराश
बच्चों का खाना लेने गई थी।
दुकानों पर लम्बी लाईन थी।
मॉल बन्द, स्टोर खाली
परचून की भी बन्द जाली।
हाथ कुछ न लगा, ऐसी महामारी।
लगता है सारी दुनिया हारी। क्या करे माँ बेचारी।
बच्चों ने अभी-अभी उड़ना सीखा है।
डांट कर गई थी, कहीं न जाना।
पर बच्चे कब सुनते हैं।

गुड़िया को कल रात से खाँसी है।
शायद पार्क में खेलने गये होंगे।
मास्क भी नहीं है।
घर में हाथ धोने वाला साबुन भी नहीं है।
फाख्ता माथे पर हाथ रखे
रोती आँसू पोछती।
गाँव की वो शहर आई फाख्ता,
बहुत निराश बहुत उदास

बस उसके पास है तो जीने की आस
अब तो लगने लगा 'जहान'
ये शहर है
या सपनों का जहर।

♦

मैं पार्क हूँ

हरी घास का लम्बा मैदान
जिन्दगी की तरह छोट-मंझोले और बड़े वृक्ष
न थकने वाले उत्साह पैदा करते फुव्वारे
मुस्कराते, खुशबू बिखेरते फूलों के दस्ते।
इन्तजार करती बैंच और घुमाओदार रस्ते।
मैं पार्क हूँ....
गगन में परवाज करते परिन्दे
खाना तलासती चिड़ियों का लोक संगीत।
अलसाई रात का घूंघट उठाता सुनहरा सूरज
किरणों से भरता मेरा दामन।
मंद गति से इठलाती समीर का स्पर्श
गुदगुदाता मेरा बदन।
मैं पार्क....
शान से निहारता पुराना वो दरख्त जिसने मेरा जन्म देखा।
तितलियों सी चंचल नन्हे पैरों से सायकिल चलाती बच्चियाँ।
उछलते भागते फुटबाल खेलते बच्चों की टोलियाँ।
रात के उदास झूले भी हर्षित उन पर शिशु करते किलकारियाँ।
भोर की सैर में जीवन की संध्या का इन्तजार
करती बुजुर्गों की चटाईयाँ।
मैं पार्क हूँ.....
योग, व्यायाम और नकली हँसी का प्रयोग।
कभी-कभी बर्जित कोनों का दुरुपयोग।
हर्षोल्लास सुप्रभात की बेला।
हास्य-उपहास्य खेल-कूद का मेला।
शायद दिन चढ़ रहा है, शोर थम रहा है।

बच्चों को स्कूल जाना, लोगों को काम पर।
माँओं को रसोई बनाना।
एक-एक करके सबको जाना।
कभी-कभी बुजुर्ग ठहर जाते हैं।
क्योंकि उनके पास भी
मेरी तरह अकेलापन और
इन्तजार ही रह जाता है।
बस अब बागवान की खटपट
और मैं हर रोज की तरह उदास हो जाता।
मैं पार्क हूँ।

♦

पेड़ मैं चलना चाहता हूँ

एक दोपहर पेड़ के नीचे सुसताने लगा।
ठंडी हवा में गीत गुनगुनाने लगा।
तभी पेड़-पंछी की वार्ता ने चौंका दिया।
मैं शान्त हो के सुनने लगा।
हम पेड़ हैं, जायें तो कहाँ जायें।
आप तो परिन्दे हैं चाहे जहाँ जाये।

बड़ी ख्वास है, सफर करूँ, गुफ्तगू करूँ गले मिलूँ
पर पैरों में जंजीर है।
सो मैंने बाँहों को बड़ा किया।
और अपने को समझा लिया।

परिन्दों से दोस्ती मेरी पुरानी है।
मेरा वहाँ पहुँचना नामुमकिन
तो उन को बुला लेता हूँ।
बदलते मौसमों में हरे पत्ते और फूल सजा लेता हूँ।

हवाओं की मेहरबानी भी कुछ कम नहीं हम पर
तेज झोंके मिलन का एहसास देते हैं।
गले नहीं मिल पाये तो साथियों से हाथ मिला लेते हैं।

मैंने दुनिया को बदलते देखा है।
कुदरत के करिश्मे देखे हैं।
ये सोच हमारी पुख्ता है।
एक दिन हम भी चल पायेंगे

मुमकिन है कुछ वक्त लगे।
ये बात बड़ी ही गहरी थी।
मन को उलझाने वाली थी
मैं सोच में डूबा उठा खड़ा हुआ।
पेड़ से एक आवाज सुनी
हममें और आप में बस ये अन्तर है।
आप चलते हुये पेड़ है।
और मैं रुका हुआ इन्सान।
पाँसा कभी भी पलट सकता है।

♦

नारी तू, आज भी उदास है

तू ही सृजन तू ही नये समाज की आस है।
सदियाँ तुझसे हैं, फिर भी तू उदास है। नारी तू आज....
लड़की, बहन, पत्नी और माँ जैसी तेरी हस्ती।
फिर भी तू कभी खिलखिलाकर नहीं हँसती।
नन्हे-नन्हे पैरों से और कहीं लाठी टेककर आज भी चलती।
हर पल तुझको रोका, टोका, परतन्त्र हो तुम पिसती रही,
नारी तू.... आज भी....
जिस नारी ने हमें जन्मा, चलना सिखाया।
उसी को हमने खूब सताया खूब रुलाया।।
पुरुषार्थी हो, जागो, बदल लो अपनी फितरत
कर लो अपना दामन साफ कहने को न रह जाये,
नारी तू आज भी उदास।
बढ़ने दो उनको भी आगे आसमान में भरे उड़ान,
खुलकर करने दो पूरे अब उनको अपने अरमान।
भले चाँद-तारे हम छू लें, मंगल गृह पर बस जायें।
तू अब भी पिंजड़े की मैना है, मन ही मन उदास है।
नारी तू.... आज भी....

♦

न जाने क्यों और जीना चाहते हैं

इन्सान और जीना चाहता है।
स्वास्थ गुरुओं के हर हथकंडे अपनाना चाहता है।
सूखे कपोल, अलोम-विलोम ने खोल दी पोल।
पीठ से चिपका पटे और कपाल-भाती
भले हो न पाती।
सुबह कान बन्द, हाथ में दण्ड स्वान से बचते बचाते।
मोरनिंग वॉक करते।
नकली दाँतों से चने चबाते।
वी.पी. की गोली पाकेट में संभाले
शाम को भी घूमने निकल जाते।
न जाने क्यों.....
किसी ने बताया खाना जल्दी खाया करो
अब वो 9 बजे वाला खाना 6 बजे खाना चाहते।
किसी ज्ञानी ने बताया संसार माया है।
सब यही छूट जायेगा, कुछ त्याग करो।
सब कुछ, धन दौलत गरीबों में बाँट दो।
बस यही बात वो नहीं समझना चाहते हैं।।
न जाने क्यों....
दूसरों की मदद करने की नसीहत उन्हें नहीं भाती है।
पास बुक की बढ़ती संख्या मन को लुभाती है।
मोरनिंग वॉक में जो मिल गया उसे ज्ञान से सराबोर करा दिया
खुद तो हल्के हो गये उसको बोर कर दिया।
जिम्मेदारियों से मुक्त पर मोह-माया से युक्त।
सब्जी मंडी में धनिया मिर्चा मांगे मुफ्त।
अपनी पोजीशन की तारीफ करते नहीं थकते।

न जाने क्यों....
चाय की दुकान पर किसी परिचित को ताकते।
कभी-कभी हफ्तों सौ का नोट नहीं टूटता।
पर अपनी बड़ाई का सिलसिला नहीं छूटता।
अब तो घर-बाहर पूछ-ताछ भी कम हो गई।
दवा-दारू की जरूरत भी खूब बढ़ गई।
जिन बातों को खुद न समझे औरों को समझाना चाहते हैं।
न जाने क्यों.... और जीना चाहते हैं।

♦

पाती उनके नाम

बहुत खूबसूरत हो।
मेरी सार्थक कल्पना हो।
जीवन की सांस
दिल का एहसास
तन का स्पर्श
मन की आस हो।   बहुत....
शीतल हिमालय सी,
झरने सा-संगीत
रेगिस्तान की गर्म जोशी
घने जंगल की छाँव हो। बहुत....
समंदर की बयार
चंदन, चीड़, धरती की खुशबू
चाँद-तारों की ओढ़नी
परवाज करती हंसनी हो। बहुत....
विश्राम की घनी रात
सुनहरी किरणों सा प्रभात
कुलाचें मारती हिरनी
एक ताजा बहार हो।   बहुत....
साथ है तेरा तो सब मेरे साथ हैं
टूटे न ये सिलसिला दुआ को उठते हाथ हैं।

♦

मैं मौन रहता हूँ

शोर तो शोर है इसको क्या सुना जाये।
चलो आज सन्नाटे से गुफ्तगू हो जाये।
बिना लिपि की भाषा को समझा जाये।
घना जंगल अंधेरी रात।
हवाओं के पदचाप
सिर्फ अपनी साँसों का आभास
और बस।
कानों में एक गूँज, मैं सन्नाटा हूँ।
गीत गाता
अपनी जिन्दगी का सफर गुनगुनाता।
कब से चला उसकी खबर नहीं।
कब तक चलूँगा कभी सोचा ही नहीं
जब से चला रुककर देखा ही नहीं
गीत अपना
संगीत अपना
पर मनमीत कोई नहीं
पुराने दरख्त मेरे हम सफर।
कुछ साथ है, कुछ को भूला ही नहीं।
सन्नाटा मुझसे पूछता
तू मुझे सुनने आया है।
तो बता, लोग मुझसे क्यों कतराते हैं।
उनके वीरान, सुनसान रास्तों पर हम ही साथ निभाते
कभी किसने पूछा होता
हमसे भी दम भरने को
दूर तुम्हें अभी जाना है।

कितने किस्से सुनना
और सुनाना है।
पर नहीं किसी ने ऐसा सोचा।
कभी इस डरावनी, लम्बी जिन्दगी से घबराकर
दिल करता।
मैं भी शोर हो जाऊँ।
फिर शोर मचाऊँ।
सबके साथ नाचूँ गाऊँ
पर मेरा ईमान
रोक देता है मुझको।
इसलिये मैं मौन रहता हूँ।
मैं सन्नाटा हूँ।
तेरे जैसे लोग भी हैं 'जहान' में
जिसे कद्र है मेरी।
तेरा इन्तजार करूँगा।
एक अट्टहास और अलविदा सन्नाटा।

♦

चिड़िया की शोक सभा

मैं कविता सुनाना चाहता हूँ।
कुछ बताना चाहता हूँ।
भारी शब्द मुझे थकाते!
और श्रोता को सताते।
सरल शब्दों की लेखनी से लिखी
मैं कविता सुनाना चाहता हूँ।
मैं खुशी से उछल-कूँद करती नन्हीं चिड़िया निहार रहा था।
उसने बस एक उड़ान भरी और
फड़फड़ा कर जमीन पर गिरी।
ये उसकी आखरी उड़ान थी,
शायद थक गई या सर्दी से मर गई।
मौसम को देखते, वस्त्र भी कम थे उस पर
पास से देखा तो मुड़ गये उसके पर
चोंच में कुछ दाने,
जीने की और मोहलत माँगती आँखें।
लगता है बच्चों को खाना खिलाने जा रही थी घर
मैंने नम आँखों से उसे उठाया,
हाथ से सहलाया,
पानी पिलाया
पर जीवन वापस न कर पाया।
शोक सभा कर उसकी तो कर दी विदाई
तब से ढूंढ़ रहा हूँ उसका घोंसला
उसके बच्चों को ढांढ़स बधाना चाहता हूँ
मैं कविता सुनाना चाहता हूँ।

♦

रास्ते के पेड़

वो पेड़ जो रोज मुझे रास्ते में मिलते हैं।
लगता है, वो भी मेरा इन्तजार करते हैं।
कुछ छोटे, बड़े झुके से।
और कुछ थके से?
न जाने क्यों मुझसे रोज आने की जिद्द करते हैं।
चाँद तारों के आगोस में रात काट नींद अभी-अभी तोड़ी है
अंगड़ाई ले, बाँहें फैला नरम धूप से कड़ी जोड़ी है
आत-जाते मेरा स्पर्श उनको भाने लगा है।
कभी मेरे इतने करीब आकर रास्ता रोक लेते हैं।
जब तक हाथ न मिला लूँ जाने नहीं देते हैं।
बदलते मौसमों में फूल और खुशबुओं से सजी
अपनी बैठक में बुला लेते हैं।
पहले तो मैं शरमाता हूँ।
फिर मान जाता हूँ
कौन सा जादू है, इनके प्यार में
मौसम कोई भी हो।
मैं उनसे मिलने जरूर जाता हूँ
सर्दियों में सफेद चादर में लिपटी नाजुक टहनियों
शरमाई सी सूरज-मिलन को आतुर है
मेरी आने की आहट पर भी अपने कान रखे हैं
वो पड़े जो रोज मुझे रास्ते में मिलते हैं।
लगता है वो भी मेरा इन्तजार करते हैं।

♦

बंजारा मन

बंजारा मन, और ऐ फागुन
हुआ बावरा, हर पल भागे पल-पल डोले।

पनघट से आती गोरी
रुनझुन पायल, नथुनी झूले।
गागर छलकें
भीगे कूल्हे
बंजारा... पल-पल डोले।
माथे पर हीरे सी बूँदें।
लाल हो गये गोरे गाल
गीली चोली लिये कुदाल
एक मजदूरन खेत, संभाले
बंजारा... पल-पल डोले।
कुहू-कुहू कोयल की बोली
आम रहे बौराय
छाँव घनेरी फाग मंडली
डोल-मंजीरा बंसी बोले
बंजारा... पल-पल डोले।
बनके भँवरा कलियाँ चूमे
पीली सरसों के संग झूमे
दौड़े बच्चों की टोली संग
तख्ती, बस्ता बन कर
तेज हवा बन घूंघट खोले।
बंजारा... पल-पल डोले।
भाँग का कुल्हड़

पान का बीड़ा
उड़े लाल गुलाल
बन पिचकारी होली खेले
बंजारा... पल-पल डोले।
घर से निकला
प्यार बांटने
प्यार ही देना, प्यार ही लेना
चूमे धरती और आकाश
प्यार से खेले प्यार के खेल।
बंजारा... पल-पल डोले।

♦

हम कहाँ आ गये हैं?

यहाँ सब बेचे और खरीदे गये हैं।
कुछ सिक्के पुराने और कुछ नये हैं।
कीमतें देखती रहीं बाजार का रुख
कुछ महंगे और कुछ सस्ते में गये हैं।
यहाँ....
सब है माहिर लाभ हानि के खेल में
कुछ यों ही आ गये बाजार में
मेले यों ही सजते, उजड़ते रहे।
रौनकें घटती-बढ़ती रहीं हाट की
मोलभाव भी चढ़ते-उतरते रहे।
कुछ बिके कुछ बापस आ गये हैं।
यहाँ....
मौसम की तरह बाजार बेबस हो गये हैं
बो जो कल सस्ते थे
आज महंगे हो गये हैं
जिनको सलीका नहीं था तिजारत का
वो कारोबार के मसीहा हो गये हैं।
यहाँ....
बिकाऊ, टिकाऊ की तख्ती देख खरीददार सावधान हो गये
बिकने वाले हर बार की तरह मजबूर हो गये हैं।
कब से लगा ये बाजार? कब तक चलेगा? ये सिलसिला।
जहान तू ही करेगा यह फैसला।

♦

फूले पलास

प्रेम मिलन करते तलास
बिना पात फूले पलास!
मधुमक्खी, तितली की टोली
गुनगुनाती पक्षी की जोड़ी।
आतुर करने को रसपान
मन्द-मन्द मुस्काते पलास।
बिना पात.....
हर पुष्प, आग सा जलता दिल है।
आस मिलन से तपता दिल है।
पात-पतन कर घूंघट खोले।
हर डाली पल-पल में डोले।
बिरह आग में जलते पलास।
बिना पात....
यौवन से इठलाती कलियाँ।
चंचल मन ले मचली कलियाँ
काले भँवरे रस्ता रोकें
देख देख शरमाती कलियाँ
हर नजरों को भाते पलास।
बिना पात....
सर पे लाल चुनरिया डाले।
पलास कुछ ऐसे फूले।
जैसे रात घने जंगल में
जले कबीलों के चूल्हे।
सब दिन पक्षी भी रहना चाहे इनके पास
बिना पात.....

♦

माँ

दुनिया ने नकारा, माँ तो तेरी याद आई।
बाप का साया, तेरे आँचल की छवि, आँखों में उभर आई।

आँसुओं के सागर में डूबने-उतराने लगे वो पल
सोने के लिये माँ फिर तेरी लोरी याद आई।

क्या मुझसे भी कोई भूल हो गई थी?
कब दिया था तुमने मुझे सेवा का मौका?
बचपन में ही मेरी उंगली छोड़, यह कह कर चली गई।
कि अभी लौट आऊँगी पर तुम न आईं
और जब भी आईं तब यादों में आईं
तूने जो मुझे मेरा आधार कार्ड दिया था
उसकी इबारत धुंधली पड़ने लगी
कोई नाम पढ़ पाता तो कोई पता
कोई कोई दोनों ही नहीं
बहुत वक्त लगता है
उनको समझाने में
कि मैं कौन हूँ?

♦

विलाप

कितने पुष्प दफन होंगे पतझड़ के जाने तक।
कितने और पल्लवित होंगे फिर बसंत के आने तक।

करती कहाँ विलाप प्रकृति किसी के आने-जाने पर

तू सर पकड़े बिलख रहा
ढोल मंजीरा पीट रहा
इनके आने जाने पर।
करती कहाँ विलाप....
चलो मान ले सुख-दुख है जीवन की फित्‌रत।
पर चिन्ता करने से कहाँ रुकी है क़ुदरत।
क्यों निराश है जहान तू
इस जहान की हल-चल पर
करती कहाँ विलाप....।

♦

मेरे आंगन की गौरय्या

उसने एक सपना देखा
सारे जग को अपना देखा
हर पेड़ बना घर उसका
हर डाली उसका झूला
बगिया का हर फल
दरिया का मीठा जल।
खेतों के सारे दाने
उसे बुलाते और मनाते।
उछल-कूद कर नन्हे बच्चे गीत सुनाते।
सपने में सोई गौरैय्या उसमें उसने सपना देखा
जग सारा बेगाना देखा।
पेड़ों पर नाग विषैले।
सूखे सारे फूल।
चील शिकारी गगन में घूमें
हर डाली में शूल।
दरिया से घड़ियाल घूरते
धूप से चटकें सारे खेत।
दाना पानी, लुप्त हो गया
बंजर धरती उड़ती रेत।
कहाँ खो गये बच्चे मेरे
रो रो कर उन्हें पुकारे।
हुआ सवेरा सपना टूटा
बैठ मेरे कन्धे पर बोली
इसको मैंने पास से देखा
ये 'जहान' है झूठा।

♦

मन

कितना मन तेरा है भोला।
हर धड़कन के संग-संग डोला।
भँवरा बन वह कली से बोला।
बना परिंदा गगन में डोला।
तितली बन बगिया में झूमा
वन मयूर जंगल में घूमा।
कितना....
पनहारिन संग चल पनघट तक
साथ गुजरिया दूर नगर तक।
कोयलिया बन, गीत सुनाता
बादल के संग दौड़ लगाता।
कितना....
रेगिस्तान में रेत का सागर
और हिमालय में बर्फ की चादर
तारों के संग करे रतजगा
चले चाँद संग सारी रात
हवा बने तो देखे कई नजारे
बनके बंजर खेत संभारे।
हर मौसम में सीखा जीना
ये 'जहान' अब लगे हसीना
कितना मन तेरा है भोला
हर धड़कन के संग-संग डोला।

♦

प्रेम बोध

शाम जरा तुम ठहरो
सूरज को ढल जाने दो।
जुगनू अपना दिया जला ले
रजनी गंधा खिल जाने दो।
तारों की चादर में सिमटी
रात दुल्हन सी सरमाये।
बादल के घूंघट में
चाँद सा मुखड़ा अभी छिपाये
हवा का झोंका घूंघट खोले
चेहरा तो दिख जाने दो। शाम....
होठ गुलाबी मय का प्याला।
नैन नशीले छलके हाला।
जिस्म तेरा पूरी मधुशाला
तुम साकी मैं पीने वाला
तन को मन, मन को तन में
प्रेम मगन हो जाने दो। शाम....
मौन हो गई बातें सारी
भाव मुखर हो जाने दो
पीछे छोड़ो इस 'जहान' को
बस प्रेम बोध रह जाने दो। शाम....
सूरज को ढक जाने दो।

♦

हरदम के लिये

कौन आता है यहाँ हरदम के लिये।
आता है बस कुछ पल, कुछ दम के लिये।
चन्द खुशियाँ और ढेरों गम के लिये।
चाहतों का सैलाब और सपनों का लश्कर लिये। कौन....
आते हैं खुशी-गम के दो खिलौनों से खेलने।
उसी में हँसने और रोने के बहाने ढूंढ़ने।
खेल खतम होते ही घर लौट जाने के लिये। कौन....
आते हैं रोते-रोते हँसने के लिये।
ठहर जाते हैं हँसते-हँसते रोने के लिये।
कुछ दौलत के लिये।
कुछ शोहरत के लिये।
कुछ थोड़ा-थोड़ा दोनों को लिये
और फिर दौलत और शोहरत की सेज पर
थक के सो जाने के लिये। कौन....
रिस्ते बनाना फिर निभाना या उनकी तिजारत के लिये।
कभी रिस्तों के बोझ से दबकर मर जाने के लिये।
इस कारवाँ में वक्त मालिक है हर दास्तां के लिये कौन....
कितनी मोहलत दे ये वक्त के हाथ है।
फूल भी खिलते हैं बिखरने के लिये?
पंछी भी उड़ते हैं थक कर सोने के लिये।
हवायें भी चलती हैं थमने के लिये
सदायें भी रुकती हैं सन्नाटे के लिये
दरिया की रवानी है सागर में मिलने के लिये
सूरज भी निकलता है शाम ढल जाने के लिये
कौन आया है यहाँ हरदम के लिये?

♦

आईना बाप का

मैं अपने बाप सा दिखने लगा हूँ
उठने-बैठने का अंदाज
गुफ्तगू का लहजा
कुछ झुक कर भी चलने लगा हूँ।
मैं अपने....
सोचकर सवालों का जवाब देना
फिर रोक कर कुछ और जोड़ देना
लोगों की बातों को समझने, समझाने लगा हूँ
मैं अपने.....
वो पूछते थे हमसे रात देर आने की वजह
न चाहते हुये भी मैं वजह पूछने लगा हूँ
मेरी हर खुशी में शामिल थी उनकी खुशी
सब कुछ वैसा ही अब मैं करने लगा हूँ।
मैं अपने.....
नहीं देखी कभी उनके चेहरे पर थकन
मेरे चेहरे पर भी नहीं आती सिकन
शायद ही कभी अपना दर्द बयां किया होगा
नहीं मालूम ऐसे वक्तों में कैसे जिया होगा
मैं हूँ ना! ऐसा एहसास बच्चों को दिलाने लगा हूँ।
मैं अपने....
मेरा बाप मुझमें अभी जिन्दा है।
शायद मैं उनका आईना बनने लगा हूँ।
'जहान' में अपने बाप सा दिखने लगा हूँ।।

♦

कमाल है

खुदगर्ज इन्सान करता है गल्तियाँ
और जिन्दगी से पूछता सवाल है, कमाल है
अखबारों में माँ-बाप की सेवा का देता सन्देश
जनता से पूछता उनके माँ-बाप का हाल
करने को कहता उनकी देखभाल है।
अपने माँ-बाप आश्रम में बेहाल, कमाल है।
नशा-लूट, हत्या, अपराध नारी पर अत्याचार
दिन-रात करता बवाल है।
फिर सबसे पूछता क्या हाल-चाल, कमाल है।
टैक्स चोरी, काला बाजारी, घूसखोरी
भ्रष्टाचार की जीती जागती मिसाल है
पर स्कूल को दान, अनाथालय को खाना
पूजा स्थल पर रोज आना जाना
जलसों में माला फोटो और
जनता से करता जवाब-सवाल है, कमाल है।
जंगल, पानी, मिट्टी, वायु को दूषित कर
पूरी धरती को कर दिया निढाल है।
पृथ्वी बचाओ, योग शिविर, स्वास्थ कार्यशालायें
कीप फिट के रोज देता इस्तहार है।
खुद बीमारियों का चलता-फिरता अस्पताल है, कमाल है।
अपने हाथों से बदसूरत कर दिया इस 'जहान' को
और जिन्दगी से पूछता सवाल है।
तेरी ये अदा बेमिसाल है, कमाल है।।

♦

तन्हा हूँ

शाख से जुदा पत्ता कितना तन्हा होता है।
न कस्ती, न पतवार न साहिल का पता होता है।
बस हवाओं के कंधों पर आखरी सफर होता है।
जाने का न शोक न कोई जलसा होता है।
शाख....
वजूद मिटा! गुरूर टूटा, माँ का हाथ छूटा।
चाह कर भी वो माँ रो न सकी
उसे घर को अब गम से बचाना होता है।
शाख...
अजीब कब्रगाह है पत्तों की, सिर्फ सन्नाटा दफन होता है
मेरे गिरने पर भी कोई शोर नहीं होता है।
टूट कर अभी और टूटना है
मुझे कौन कुचलेगा मालूम नहीं होता है।
शाख से....
अजब दस्तूर है तेरा 'जहान'
तमाम उम्र जिसने तुझे छाँव बक्सी है
वही तेरी बेरहमी का शिकार होता है
शाख से जुदा पत्ता कितना तन्हा होता है।

♦

शाम, तेरी याद और मेरी तनहाई

सूरज थकता रहा जरा सी आहट भी न आई।
शर्मीली शाम न जाने कब मेरे आंगन में उतर आई।
परिन्दों का काफिला उड़ चला शायद घर की याद आई।
खेलते बच्चों की माँओं ने पुकारा दी शाम की दुहाई।
खेतों से मजदूरों की टोली भी लौट आई।
प्रियतम की बाट हेरती गोरी शर्माई कुछ अकुलाई।
चाँद भी निकला तारे झाँके, रात ने ली अंगड़ाई।
देर बहुत कर दी तुमने अब तक तुम न आई।
चरागों से रोशन, होने लगी बस्तियाँ
पर सारे 'जहान' का अंधेरा मेरे करीब था।
शायद यह अकेलापन ही मेरा नसीब था।
चलो चराग जला लूँ उसका इन्तजार किया जाये
वो आ जाये इस ख्याल से कुछ देर और जिया जाये।
तभी एक दस्तक दिल को दहला गई
देखा तो बस
बेरहम हवा दरबाजा थपथपा गई।
बस तुम न आई
साथ रही तो
शाम, तेरी याद और मेरी तनहाई।

♦

बस इतनी सी बात

शब्दों की तरह बिखरे हैं।
जीवन के शब्द कोश में।
जो करीब आओ तो वाक्य बन जाये।
दो होने से बेहतर है। एक हो जाये।
तुम तुम हो मैं मैं हूँ।
तोड़ो ऐ दीवार आओ मिलकर 'हम' हो जाये।
प्रेम सार्थक एक दुनिया नई बसाये।
प्रेम सनातन है, प्राचीन है।
पर अहसास हर पल नवीन है।
आधार-शिला राधा ने रक्खी।
प्रेम क्षितिज बन मीरा फैली।
खुशरो पाती प्रेम की।
नानक वाणी प्रेम।
संत कबीर ने प्रेम ही बाँटा।
सौदा जिसमें कोई न घाटा।।
हिमालय से सागर, बस प्रेम की गागर।
नदिया जब सागर से मिलने निकली
न नक्शा, न यातायात के साधन।
न हाई-बे का सैट-अप।
न गूगल का बैक-अप।
उसे थी बस प्रेम लगन।
ऐसी अगन जो जंगल रोशन कर गई।
पहाड़ों से भिड़ गई
मिलने की ज़िद पर अड़ गई
अद्‌भुद मिलन ! सागर-सागर न रहा, नदिया नदिया न रही

ऊँची-ऊँची लहरों ने मिटा दिया वजूद दोनों का
रह गया तो बस एक प्रेम का अहसास।
आयो अब डर कैसा
ये प्रेम है।
मैं जीता तो तुम मेरी।
तुम जीती तो मैं तेरा।
आओ अब 'हम' हो जाये।
दो होने से बेहतर है एक हो जाये।
''प्रेम हारने का इतिहास नहीं मिलता मुझको
युद्ध हारता है, तब-तब प्रेम अमर हो जाता है।

♦

कितना अकेला

अकेले में कवि कितना अकेला होता है।
वो कवि जो -
शब्दों का जमींदार
वाणी से संगीतकार
कल्पनाओं का असीमित संसार
बिन पंख सात-समंदर पार
बादशाहों सा दरबार
तालियों की गड़गड़ाहट
पुष्प मालाओं से सत्कार।

कुछ पल, हाँ कुछ पल, बस कुछ पल।
और फिर जब अकेला होता है
एक अजीब खामोशी
रुंधा गला, लुटी शब्दों की गठरी।
तैरते तमाम दृश्य कटे पंख।
मौन कोलाहल, वीरान काली रात
थके पैर भागती नींद का पीछा करता है
बस फिर एक और सुबह का लम्बा इन्तजार
अकेले में कवि कितना अकेला होता है।

♦

शर्मीली शाम

पूरा दिन का दिन लग गया शाम को शाम होने में
पिघलता सूरज छटपटा रहा है सागर में डूब जाने को
दरख्तों के लम्बे साये सिमिटने लगे जल्दी से।
वो थककर चूर थे दिन भर की चहल-कदमी से
परिन्दे वापस हो चले अपने घरों को।
बच्चे घोंसलों की चौखट पर आ गये।
मीठे-मीठे सपनों में खो गये।
मम्मी-पापा खाना-पानी लायेंगे।
रात दुबक उनकी गोदी में सो जायेंगे।
सर्द हवायें धूप से सुर्ख फूलों को चूमने निकली।
शाम की खुशबुयें चमन में घूमने निकली।
जुगनू भी लग गये रोशनी सजाने में।
तारे निकल पड़े रात की चादर बिछाने में।
झील को अइना बना शाम-सजने, संवरने लगी।
दुल्हन बन रात उसको अभी आना है।
हर-पल बदलते चाँद को लुभाना है।
शर्मीली शाम और सरमा गई।
देखते-देखते जवान हो गई
ऐ 'जहान' चलो शाम हो गई।

♦

तुम और प्रेमदिवस

तुझे देख जब उपवन देखूं
उपवन फीका-फीका लगता।
तुझे देख जब चाँद को देखूं
चाँद भी पीला-पीला दिखता
तुझे देख देखूँ बसंत जब
तब वह पतझड़ सा लगता है
जो कुछ सुन्दर ढूंढने निकला
दिल तुझ पर आकर रुकता है।
प्रेम दिवस पर भेंट करूं क्या
नहिं कुछ सुन्दर सा मिलता है।
दिल से है एक चित्र बनाया
वो भी तेरे जैसा दिखता है।
तुझे....
अगर तुम्हें हम तुम्हीं को दे दे
तो मुझमें क्या रह जायेगा।
तुझको खुद से दूर करूँ
यह सम्भव तुमको लगता है।
तुझे.....उपवन फीका लगता है।

♦

अलग नहीं

तुझसे बिछुड़ कर मैं कहाँ जाऊँगा।
गिरा शाख से तो एक पत्ता-सा तन्हा हो जाऊँगा।
हवाओं की साजिशों में रस्ता भटक-सा जाऊँगा।
वक्त की धुन्ध में कहीं दब जाऊँगा
बुलाने के तेरे इशारे कहो कैसे समझ पाऊँगा।
तुझसे बिछुड़....
नये मौसमों में तुम इतना उलझ जाओगे
मुझे ढूंढ़ने की फुर्सत कहाँ निकाल पाओगे
हमने जो एलबम सजाये थे,
अब उसके पन्ने भी पीले पड़ गये हैं,
नजर भी धुँधली चित्र भी धुँधले
कहो कैसे मुझे ढूँढ़ पाओगे।
बिछड़ना, अगर हकीकत है
'जहान' इस कुदरत की
अरे बनाते कोई 'स्फाटवेयर' ऐसा
जिसमें साथ आने जाने की तरकीब होती
तो मिल के बिछड़ने की न कोई लकीर होती।
तुमसे....

♦

बचपन

मेरा बचपन बड़ा सलोना था।
माँ थी और खेलने को एक टूटा खिलौना था।
रातें सुहानी थीं - माँ का आँचल किस्से और कहानी थी
चाँद किस्से सुनने आता था मेरे सोने के बाद जाता था।
सुबह, जागा, थोड़ा रोया।
फिर घी से लिपटी रोटी और साथ में गुड़ खाया।
बालों में कड़वा तेल, माथे पर काजल की टीका
बनयान और चड्डी में एक ही काफी था, सजने संवरने को
साथ में बच्चों की टोली थी
सारी दुनिया मेरी थी।
ऐसा माँ, बोली थी।
वह बचपन कहाँ खो गया।
कहाँ गुम हो गया।
मैं बच्चा था, समझ न पाया। उसे रोक न पाया।
सच में कोई मुझको छल गया।
मेरा बचपन मुझसे ले गया!!
खोज रहा हूँ। अब भी उसको
यादों में रोना, थक कर सो जाना
सच में मेरा बचपन था बड़ा सलोना।

♦

मेरी ही मुझसे बात

पहेली सी जिन्दगी का सफर
एक शाम खुद से मुलाकात
मेरी ही मुझसे बात
एक अद्‌भुत सौगात
मैं पूछ बैठा।
तुम रोज जागते हो
और जीने की चाहत लेकर
क्या नहीं तुझ पर जो और पाना चाहते हो
मुस्कराते हुये मेरा चेहरा पढ़कर बोला
रुतबा– वो तो एक ऋतु का जलसा है
मौसम बदला, ऋतु बदली बस
दौलत–की भूख तो एक लत है
लत का प्रायश्चित लानत है
सौहरत – की हसरत तो दो पल का तमाशा है
छोड़ जाती है साथ जब
रह जाती हताशा और निराशा है
जो मिला है, उसे बहीखाते में दर्ज नहीं करता
और लिखने को नये पन्ने तलाशता है।
बोला – जिन्दगी की किताब में सिर्फ दो पन्ने होते हैं
एक में देना, एक में लेना लिखा जाता है।
तुम दोनों में प्यार लिख कर देखो
जब भी हिसाब करोगे तो प्यार ही निकलेगा
ना दुख, ना सुख, न जीत, न हार।
बस प्यार ही प्यार।
एक अद्‌भुत संसार।

मिल जायेगा तुझे एक जीने का आधार।
मेरे प्रश्न अनेक थे, पर उत्तर एक था।
वो हँसता हुआ ओझिल हो गया।
मैं रोता हुआ अफसोस से बोझिल हो गया
वो मुझे सजने संवरने का एक आइना दे गया।
मैं अलबिदा हो गया।
वह मेरी जिन्दगी में शामिल हो गया।

♦

बेटा

कल मैं जिसका सहारा था
आज वो मेरा सहारा बन गया।
मुझको बुलाता था इशारे से कभी
मैं उसका बचपन वो मेरा इशारा हो गया।
बिठाकर कन्धों पर जिसे मेले घुमाये थे।
उठाकर गोदी में मुझको वो रास्ता पार करता है
कितनी बार पूछा था उसने एक ही चिड़िया का नाम।
अब मैं भूलता हूँ तो हर-बार मुझको बताता है।
गिराता था खाना कई बार कपड़ों पर
मैं पोंछता, मुस्कराता और फिर खिलाता था।
आज वो मेरे गले में नैपकिन लगा
मुझको खाना खिलाता है।
कपड़े गन्दे न हो जाये इससे बचाता है
माँ का वो लाड़ला है
कितने दुलार से लाठी पकड़ माँ को घुमाता है
जिसके करवट लेने पर सोती माँ जाग जाती थी।
रात जब वो खाँसती तो बेटा सिरहाने बैठ जाता है।
पीठ थपथपाता, ढांढस बंधाता, अद्‌भुत रिस्ता निभाता है।
वो माँ का सिर रखकर गोदी में सो जाने का एहसास दिलाता है
वो बेटा पार्क ले जाता है, घुमाने हर रोज हमको
दूर बैठ हमारा बचपना देख मुस्कराता है
शायद अपने बपचन की यादों में खो जाता है
वही बेटा माँ-बाप के जीने का, हौंसला बढ़ाता है
कल मैं जिसका सहारा था 'जहान'
आज वो मेरा सहारा बन गया है।

♦

कुछ न बदला

मौसम बदला, चेहरे बदले, बाग सुहाने दिखते हैं।
पर सुख-दुख के रिस्ते सारे वही पुराने दिखते हैं।
घर बदला, आंगन बदला संग आने जाने के रस्ते,
खेत भी बदले, पर नाली और मेड़ के झगड़े,
वही पुराने लगते हैं
पुस्तक बदली पन्ने बदले और स्याही बदली,
कम्प्यूटर से सब कुछ बदला
हाथों वाली लिखी इबारत, लेखा-जोखा वही पुराने दिखते हैं
मौसम बदला....
चूल्हा बदला, चौखट बदली, बदली चहरदीवारी है
चबूतरों का चलन भी बदला, बदली दुनिया सारी है।
न बदली तो तेरे मेरे करने की होशयारी है।
राग, द्वेष के मसले वही पुराने लगते हैं। मौसम बदला...
मुर्दा बदला, ठाठ भी बदले, पंडा बदला, घाट भी बदले
रोने और खोने वालों के दर्द पुराने लगते हैं।
प्रेम पत्र को हुये जमाने, मेला मन्दिर हुये पुराने
मेल-मिलाप के ढंग भी बदले, मैसेज के ढंग भी हैं बदले
अब भी इश्क-मुहब्बत के किस्से वही पुराने लगते हैं
मौसम बदला...
तुम तो कहते सब बदल गया
मैं तो कहता कुछ न बदला इस 'जहान' में
है भूख वही, है प्यास वही, जीने मरने की आश वही
अब भी रोजी-रोटी के संघर्ष पुराने लगते हैं
मौसम.....

♦

संभल के! मशीन हूँ

मैं मशीन हूँ
प्राचीन नहीं नवीन हूँ
तूने मुझे बनाया फिर शोषण किया।
तुझे बड़ा गुरूर है इन्सान होने का
अब मैं अपना गुलाम बना लूंगी तुझे
तू दिल, दिमाग, गिरवी रख देगा मुझे
रहेगा घर में अजनबी सा
और अजनबियों में अपना घर तलासता होगा
इर्न्टनैट में इतना उलझा दूंगी
दैड़ेगा, थकेगा, भूल जायेगा मंजिल अपनी
मैं मशीन....
अब तू मुझसे दूर नहीं रह पायेगा।
मैं तेरे साथ रहूँगी, तू जहाँ भी जायेगा
मेरी नज़र रहेगी तेरे फितूर पर
तू जागेगा मेरे कहने से
पर अपने मन से सो नहीं पायेगा।
बन्द कर दूँगी रिस्तों की खिड़कियाँ दरवाजे।
सूख जायेंगे चाहत के आँसू सारे।
दिल को बंजर रेत कर दूँगी।
फिर न निकलेंगे फूल प्यारे।
सोचेगा कुछ, बोलेगा कुछ, करेगा कुछ
ऐसा हाल कर दूंगी।
मैं मशीन ....
भूल कर दी तूने सुपर इन्सान बनने की।
बरबाद कर रहा है जीवन 'जहान' का

पानी, हवा, जंगल कुछ नहीं बख्सा तूने
बन्द कर लिये लौटने के सारे रास्ते।
खुशियाँ नहीं दुख भर लिये झोली में।
तेरे पास रह गया एक झोला एक बोतल
पानी, एक इन्हैलर, सुगर फ्री बिस्कुट का पैकेट
और हथेली में चमकती एक और हथेली
बस नाकाम उंगलियाँ, अलविदा और बस।

♦

क्या खो गया?

जो न मिला उसकी चाह में
जो मिल गया वह न मिला सा लगता है।
जब साथ थे, वो तो साथ-साथ न लगा
अब अलग है वो तो अलग-अलग सा लगता है।।

चिराग तब भी थे अब भी हैं,
पहले रोशनी थी अब धुआं-धुआं सा लगता है।
भूल कर जो भूल की उस भूल का सुधार कर।
जो मिला नहीं उसका मलाल क्यों
जो मिल गया उसका ख्याल कर।
संभल कर चल नये रास्तों पर
अगर थक गया तो ठहर जा
सांस ले-ले, फिर सफर एक बार कर।
दरिया, साहिल, कस्ती और हवायें भी साथ हैं तेरे
फिर कैसे पीछे छूटा मत विचार कर
जिन्दगी मौके देती है कई बार
बस अपनी कुब्बत पर इतवार कर।

♦

अन्तर जाल

अन्तर जाल में हम इतने मशगूल हो गये।
धीरे-धीरे अपनों से बहुत दूर हो गये।
घरों में रहते हैं अजनबी की तरह
हाथों में सैलफोन महजबी की तरह।
हथेली से आँखें हटती नहीं हैं अब।
नहीं मालूम कौन आया और गया कब।
सड़क, बाजार, स्टेशन हर जगह यही हाल है।
क्या फर्क पड़ता यदि ट्रैफिक की बत्ती लाल है।
मित्र, पड़ोसी, चाचा, ताऊ या कोई रिस्तेदार है।
आँख न मिलती, दिल न धड़का बस हाँ-हूँ, इतना ही सरोकार है।
किसको देखूं, किससे पूछूं किस पर इतना वक्त है।
अन्तरजाल की डिउटी हो गई उतनी सख्त।
हंसना रोना गाना और अकेले बतियाना।
और जरूरी कामों को अक्सर भूल जाना।
कौन देखे अब पत्नी की लाली और पति की टाई।
बीते वक्तों में आवाज आती भी क्या खूब लगाई
अब हर सम्बन्ध नार्थ पोल की तरह जम गये।
रिस्ते-नाते प्यार सब इंटरनेट पर थम गये।
ज्ञान की सुनामी ने दिमाग का कचरा कर दिया।
असली जीवन छीन के नकली जीवन भर दिया।
जय हो
अन्तरजाल का मायाजाल
हम सब हैं बेहाल
हाँ! हम सब हैं बेहाल।

♦

थके पैर और पहाड़ों का सफर

सुहानी शाम है पर आने वाली रात का डर
पीछे छूटते बचपन के गुलाब
बनते टूटते जवानी के ख्वाब
कब से चला हूँ न कोई हिसाब
धीमा हो गया हूँ हारा नहीं मगर
थके पैर.... सफर
कभी दौड़ती थी जिन्दगी अब कांपते कदम
नहीं अन्दाज इनमें और कितना है दम।
जो चढ़ा वो गिरा जो गिरा वो फिर चढ़ा।
पर टेड़े-मेढ़े रास्तों पर फिसलने का डर
थके पैर.... सफर
रात हो जाये तो हो जाने दो
चाँद तारों को देख।
वो कब थके और कब रुके
तू बस चलता चल।

♦

गुलाब

एक सुबह की सैर
मुझे दिखा गुलाब
परेशान बे हाल।
मैंने पूछ लिया क्या है हाल
तुम तो खुशियों और खुशबू बिखरते हो
जवाब मिला, आप तो न ही बोलें।
मैंने कहा क्यूँ?
जब तेरा जैसा इन्सान पास आता है
तो मैं डर जाता हूँ।
मुझे खूबसूरत बता कर तोड़ लेता है।
माँ की डाली से छीन लेता है
और
तितलियाँ, भँवरे, मधुमक्खियाँ पंछी मेरा
रसपान करते और लौट जाते हैं।
हवायें मुझ से खेलती है।
बरसात में 'रेन-डांस' करता हूँ
और तू इन्सान श्रेष्ठ होने का वहम पाले।
क्या तेरे यहाँ ये रिवाज है?
जिसकी सरहाना करता उसी का संहार
प्रश्न गम्भीर था मैं व्यथित,
थका-सा, लान की बेंच पर बैठ जाता हूँ
सोचने लगता हूँ क्या वास्तव में हम श्रेष्ठ हैं
क्योंकि फूल कभी झूठ नहीं बोलते।

♦

ये संसार निराला है

एक प्रेम का प्याला है।
सूरज सी गर्मी
चाँद सी नरमी
तारों का खेल तमाशा
और दिलों का मेला है। ये संसार....
चंचल दरिया, गहरा सागर
रेगिस्तान, पर्वतों के किनारे
चमकती बिजलियों के इशारे
काली घटा सी जवानी
आँखों-आँखों से मिलने की बात
सुबह की शीतल बयार
शाम गोधूली बेला है। ये संसार....
जंगलों की अँधेरी रात
जुगनुओं की बारात
पंछियों के प्रेम गीत
फूलों पर जवानी
उन पर नाचती तितलियाँ
युवती का चौखट पर इन्तजार
आकाश में रंगों की मधुशाला है। ये संसार....
साधू, संत, फकीरों की तकरीर
कवि की कविता, चित्रकार की तसवीर
प्रेम की पूरी किताब
ज्ञान-विज्ञान की पाठशाला है ये संसार.....

♦

करवट

धक्का देकर मुझे गिराया
इस अनजानी खाई में
धुप्प अंधेरा बिचलित मन
डरा-डरा सा लगता हूँ।
दिल-दिमाग का मेल नहीं अब
थका-थका सा लगता हूँ।
मैं अब मैं नहीं हूँ ये आयना कहता है
हर तरफ शोर है पर सन्नाटा रहता है।
भीड़ बहुत है मेले जैसी, पर सूनापन खलता है।
उदास मन है इसीलिए, दुनिया बदसूरत सी लगती है।
एक नन्हीं परी की आहट दस्तक देके बोली
आँखें खोलो 'दुनिया' अब भी सुन्दर दिखती है।

चलो रेत में सीप तलाशे इन बच्चों के संग
नील गगन में तारे खोजे चन्दा मामा के संग
मोर इशारे कर कहती है देखो मेरा रंग
दरिया के पानी में तैरो उन लहरों के संग
आँखें....
कंधों पर झोली डाले, लिये उजाले, फिर निकला हूँ मैं।
हर चेहरे को हँसी बाँटने, खुशी लुटाने, फिर निकला हूँ मैं!

♦

मिट्टी से खिलौने

मिट्टी गूंघता
आकार देता
हाँ मैं खिलौने बनाता हूँ।
कभी अच्छे, पक्के और साकार होते हैं।
कभी भद्दे, कच्चे और बेकार होते हैं।
कभी देर तक निहारता और तोड़ देता हूँ।
हाँ मैं....
कभी सजाता, संभालता मेले ले जाता
लोगों का दिल जीतता तो फूला नहीं समाता
निराश लौटता तो हारा सा दिखता हूँ।
हाँ मैं....
सोचता हूँ कि ये खिलौने सबके लिये नहीं
कला पारखी, कला प्रेमी ही सही
फिर नये उत्साह से बनाने लगता हूँ।
शब्दों की मिट्टी गुंथता
कविता, कहानी का चलाता चाक हूँ
सजे, सुन्दर, सलोने बनाता ये खिलौने
हाँ मैं खिलौने बनाता हूँ।

♦

और हम पुराने हो गये

घरों में पुराने को सजाने के दो ही तरीके होते हैं
बैठक में रखा तो स्मृति चिन्ह और स्टोर में कबाड़ कहलाते हैं
स्मृति बनने से पहले मकान के आखरी कमरे के मालिक बन जाते हैं
विश्राम को एक चारपाई/तख्त,
भोजनालय में एक टेबल
और पर्दे के पीछे सुविधालय
एक कोने में पुराने अखबारों का बंडल
जल विभाग के नाम पर एक आधुनिक कमंडल
थ्री स्टार सुविधा के लिये अपनी मर्जी से चलने
रुकने वाला टेबल फैन
गेट तक लम्बी गली आपका क्रीड़ा स्थल
एक छड़ी, चार तानों वाला छाता
पीली रोशनी देता हम उमर बल्व
खूंटी पर आड़े-तिरछे झूलते कपड़े
हवाई चप्पल के दो सैट
आगन्तुकों के लिये स्टूल या
आधा जीवन व्यतीत कर चुकी चटाई
तीव्र ध्वनि अलार्म घड़ी जो सुबह
मुख्य द्वार का ताला खोलने दूध और अखबार
एकत्रित करने में बिना थके सहयोग करती।
भोर की सैर में स्कूल की छुट्टी जैसी खुशी का एहसास
बस फिर एकांत और उदास

♦

दूसरी डायरी

कभी-कभी अपनी पुरानी डायरी पढ़कर
नादानियों पर मुस्कराता हूँ
ऐसा भी किया था हमने सोचकर
सहम जाता हूँ।
सही-गलत तो जानता था
पर दिल ही नहीं मानता था
या तो अनुभव की कमी थी
या जीने का जोश था
कितनी भूलें, कितने किस्से
साथ अगर मिल जाते
न जाने हम कितने हिस्सों में बँट जाते।
कभी रोये, कभी रात भर न सोये।
आज भी मुझे कोई यादों में ढकेल देता है
वही अपने वादों का वास्ता देकर संभाल लेता है।
आज भी मुझे उन गलतियों के राजदार मिलते हैं
कुछ झिझकते, तो कुछ बचके निकलते हैं
नहीं मालूम उनमें मेरे लिये और मुझमें उनके कुछ बाकी हैं।
पर बात ये सच्ची है कि उनकी याद बहुत आती है
कुछ ने थकी-थकी सी पहल की
और कुछ ने भूलने की चादर ओढ़ ली।
वो सीढ़ियों से एक दूजे का गुजरना
गेट पर स्कूल जाते देर तक खड़े रहना
बे जरूरत पानी लेने नलके पर जाना
उसकी जगह उसकी मम्मी का आ जाना
नहीं मिलता था कोई बहाना, तो

कालेज को दौड़ जाना
केवल टिकट के पैसे लेकर उसके पीछे
दूर तक सिनेमा देखने जाना
हाउस फुल का बोर्ड देख कर पैदल वापस लौट आना।
आज भी नये से लगते हैं।
पुरानी डायरी के पन्ने।
सच तो यह है कि जो गलती
नहीं करता
वह कुछ नहीं करता।

♦

बन्धन

छंद की नाप तौल, ग़ज़ल का काफिया पीछे छोड़ आया हूँ
आज मैं बिना बन्धन कुछ लिख कर लाया हूँ।
जमीन को सरहद से
नदी को बांध से
इंसानियत को धर्म से
भाषा को ज्ञान से
साहित्य को व्याकरण से ... बन्धन क्यों?
नारी को पर्दे से
समाज को दर्जे से
मर्द को कर्जे से
जिन्दगी को उम्र से
वक्त को घड़ी से .... बन्धन क्यों?
पहरन को सलीके से
प्यार को पहरे से
क्यों नहीं मुक्त होकर जीने देते
जीवन जैसा मिला था
एक बार तो जीकर देखते।
क्या गलत था क्या सही था,
बिन परखे खींच डाली
आड़ी तिरछी बन्दिसों की
अनगिनत रेखायें
भूल गये वो मुक्त बचपन
जब बचपन सिर्फ बचपन था
तोड़ दो बन्धन/
जीवन को बस जीवन ही रहने दो।

♦

संसार में संसार

ऐसा भी है एक संसार
जो आहार और बासना में
तलाशता बहार
कर रहा स्वयं का संहार और बस

अंजुल भर पानी, चन्द दाने, मुट्ठी भर आसमान
तीन कदम धरती, रात भर का मेहमान।
संजो रहा गठरी भर सामान और बस।
नींद में दौड़ता
खामोशी में चीखता
दिन में बेहोश
रात में मदहोश
मंजिल से अनजान
भटकता इन्सान और बस

मुक्त होने की ललक
पर गांठें उल्टी लगा रहा
तलाशता शांति है पर कोलाहल मचा रहा
एक हाथ से कुछ उठता दूसरे हाथ से गिरा रहा
और बस।

♦

मेरा बसंत

मैंने बसंत ऐसे देखा
तुमने जैसे भी देखा हो।
उपवन, जंगल, दरिया, खेत और नीला आकाश
गोरी, पंछी, पर्वत प्यार भरा एहसास।
ऋतु मिलन में पर्दा कैसा, चलो हटा देते हैं
पेड़ों ने भी मान लिया पीले पत्ते - चलो गिरा देते हैं।
उन पत्तों से स्वागत में चादर एक बिछा देते हैं।
नई कोपलों में लिपटी कलियां, सोने के गहने पहने।
सिन्दूरी माँग लिये गीत सुनाती जाती मिलने।
पीली चुनरी ओढ़े किरण भी - बड़ी मनचली लगती है।
पत्ती, कलियाँ फूल हवायें
बाट जोहती कब वो आये।
मिले इशारा जरा उन्हें तो
झट से दौड़ गले लग जायें।
कितना प्यारा, कितना मोहक, मेरा वसंत
इस वसंत को बस अन्त तक,
बसंत ही रहने दिया जाये।
प्यार का बस अन्त न होने पाये।
ऐसा बसंत लाया जाये।
मैंने बसंत ऐसा देखा,
तुमने जैसा भी देखा हो।

♦

सूरज! इतना गुरूर

एक बादल का टुकड़ा तोड़ देता है सूरज का गुरूर!
अचम्भित नीला आकाश सोचने को मजबूर।
अनगिनत आग में लिपटे तीर
भेदने लगे बादल का शरीर
बादल क्या जाने लड़ना
वो तो प्रेम का दूत है
गीत गाता प्रेम बांटता
बादल के अमृत कलश ने
पी ली, वो सूरज की आग।
जला लिया अपने को
मिटा लिया अपने को
पर दे गया शीतल 'बहार-फुहार'
हार सूरज की हुई, न मिट कर भी!
बादल अमर हो गया मिट कर।
ऐ सूरज मिटा दिया! तेरा अस्तित्व
क्षणिक ही सही।
तेरी आग को आग लगा दी पानी से।
बना दिया धुआँ तेरा अहम।
तोड़ दिया तेरा अजेय होने का वहम।
तू सोचता था, मैं सूरज हूँ।
कौन उलझेगा मेरी आग से।
अगर कुछ अजेय है तो प्यार
जिससे चल रहा संसार।
एक बादल.....

♦

वक्त का वक्त

वक़्त ने वक़्त को ढलते हुये भी देखा है।
लड़खड़ाये कदम फिर, उनको सँभलते हुये भी देखा है
सितारों की चाल सितारे जानें
पर वक्त ने उनको भी बनते बिगड़ते देखा है।

एक सूरज जो चमकता है कभी
बुझेगा भी कभी
वक्त ने उसकी, वही के पन्नों को सजते संभारते देखा है
वक्त ठहरा भी दम भरने को वक्त के इशारे पर
उसी को कछुआ से खरगोश बनते भी देखा है
ऐसा वक्त भी आया
कुछ नहीं था वक्त पर संभालने को
और फिर कभी सब होते हुये
कुछ न संभालने का ख्याल भी देखा है।
वक्त को सदियों तक सोते हुये
और फिर कभी बेलौस दौड़ में
सोने के लिये तरसता हुआ देखा है।
वक्त को बुरे वक्त में रोते
और अच्छे में खिलखिलाते हुये देखा है।
वक्त पर भी अपनी मुश्किलें कुछ कम न थीं।
वक्त को वक्त ने दर-बदर भी देखा है।
सदियों लग गईं 'जहान' वक्त को वक्त बनने में।

♦

तन्हा–तन्हा

लगता है हर शख्स कितना सिमटा–सिमटा सा।
तन्हाई की चादर में लिपटा–लिपटा सा।
दिन–रात का एहसास कुछ थम सा गया है।
वक्त लगता है कि जैसे जम–सा गया है।

चाँद तो चाँद था सूरज भी चाँद दिखता है।
इतना सन्नाटा कि परिन्दे भी दिन को रात समझ बैठे।

इस सागर सी गहरी तनहाई में
तेरी याद ही मेरी कस्ती है।
शाम भी गुमशुम।
तारों भरी रात भी तन्हा–तन्हा।
यादों की बस्ती में तमाम चराग़ बुझ चले।
एक तेरा ख्याल बस रौशन है 'जहान',
आओ चलो दूर–दूर आकाश में शोर मचा के देखें
तन्हाई तो तन्हाई है।
इससे भी लड़के देखें।

♦

रात क्यों जागती

सच्चाई से बोध कराता नि:शब्द रात का शोर?
सूरज को भी आते-आते हो जाता है भोर।
रात जागती रही रात भर
हुई नींद से बोझिल
तारों ने भी बन्द कर दिया
लुका-छिपी की झिलमिल।
यादों की आतिशबाजी भी
छोड़ गई धुप्प अंधेरा।
सब चेहरे अब एक से लगते
सुख-दुख ने है सब को घेरा।
ख्वाबों की बरसात भी आई।
हर सरहद पर लड़ी लड़ाई।
कंधों पर लांघे दुनिया
वक्त हुआ बेहाल।
उपवन देखें, निर्जन देखे।
धीरे-धीरे बीते साल।
सूखे तालाब के हंस एक रिस्ता निभा रहे हैं।
क्षितिज पर आहट शायद नये पंछी आ रहे हैं।
थका 'जहान' सोता है जब
रात जागती है तब

♦

मेरी खिड़की का वो आसमान

मेरी खिड़की का वो आसमान मेरा है।
उससे दिखते तमाम नजारे सब हमारे।
रात का चाँद और सितारे
भी हमारे।
सूरज रोशनी का, गुलदस्ता ले मेरी खिड़की पर आता
मुझको जगाता।
काली घटाओं के छलकते वो कलश
बिना बरसे खिड़की से गुजरते नहीं।
कड़कती बिजलियाँ
खिड़की पर लगे शीशों पर दस्तक देती।
वो सब मेरी है।?
हवायें कब गुजरी हैं बिना खुशबू बिखेरे
खुली खिड़की से मेरी।
परिन्दों की गुजरती लम्बी कतारें
सब हमारी।
दूर वो दिखते घने जंगल पहाड़ों के हुजूम
वो इठलाती, बल खाती नदिया भी मेरी है।
आम पर बैठी कोयल का गीत, पत्तों का संगीत मेरा है।
मेरी खिड़की का वो आसमान मेरा है।
ये सारी मिल्कियत मेरी है 'जहान'
आप की हैसियत से मेरा कोई सरोकार नहीं।

♦

एक बार तो मुस्कराइये

ख्यालों की जंग से बाहर निकल आइये।
बहते दरिया पर साहिल मत बनाइये।
थक जायेगे बाजू तेरे।
हो जाओगे मिट्टी, मिट्टी को संभालते।
जिन्दगी बहुत खूबसूरत है।
इसकी कीमत मत गिराइये।
तितली पकड़ो फूलों से बात करो।
दरिया की लहरों को संगीत बनाइये।
किसी शाम सज़र में जुगनू तलासिये।
पनघट पर गोरी की पायल की धुन।
पत्तों पर गिरतीं बारिषों की बूंदों को सुन।
दिल को बिना पिंजरे का परिन्दा बनाइये।
बदलते मौसमों में नये खव्वाब सजाइये।
चेहरे की ग़र्दिश पोंछ डालिये 'जहान'
ज़िन्दगी में एक बार तो मुस्कराइये।

♦

क्या तू सोचे?

वक्त का दरिया बहता है,
बह जाने दो
मोड़ पड़ेंगे कई सफर में
फर्ज उन्हें भी निभाने दो।
सागर से मिलना उसकी किस्मत
पत्थर से भी टकराने दो। वक्त.....
कब रुकता है दरिया
बाधाओं को अपना मन बहलाने दो
काली रात तेज हवायें
तूफानों से संकेत मिले।
चलते रहना हुनर है उसका
भले ही जुगनू का साथ मिले वक्त.....
कल फिर सूरज की किरणों से
बदन पूरा सज जायेगा।
पुरवाई के झोंके से
आँचल फिर लहरायेगा।
खुशबू फूलों की, संगीत परिन्दों का
तन मन में बस जाने दो। वक्त.....
वाट जोहते सागर के आलिंगन में खो जायेगा
बस 'जहान' वो घड़ी मिलन की आने दो।
वक्त का दरिया बहता है, बह जाने दो।

♦

बन्द रास्ते

बेचैन बन्द रास्ते फिर से चलने लगे हैं।
सुबह-शाम अब जाने-पहचाने से लगने लगे हैं।

खिड़की दरबाजा भी सजने-संवरने लगे हैं।
चौखट पर आने जाने के सिलसिले बनने लगे हैं।
सोई हुई गलियों में बच्चे खेल-कूद करने लगे हैं।
बेचैन.....
मेरा सज़र में आना।
स्वागत में डालियों का झुक जाना।
पत्तों की कदम-ताल और फूलों का मुस्काना।
हवाओं का गले-लग जाना परिन्दे पंख फैलायें।
किसी के आने की खुशी में पगडंडी पलकें बिछाये।
हम फिर उनको भाने लगे हैं।
बेचैन....
घने सन्नाटे में कैद चौपाल
अलाव से फिर चमकने लगे हैं।
गूँगे बाजार फिर चर्चा में आ गये।
जलेबी के थाल, चाट के ठेले सजने लगे हैं।
बच्चे भी बाजार जाने को मचलने लगे हैं।
बेचैन....
जीवन के कितने आयाम- समय की गर्त में खो गये
'जहान' फिर भूले बिसरे गीत जैसे याद आने लगे हैं।
बेचैन.....

♦

वो शख्स

जो हर रोज दिखता है
हालो, हाय, वाय-वाय भी करता है
उसकी बातों में अपनापन बहुत झलकता है।
दफ्तर बाजार पार्क और जानी पहचानी भीड़ में
अक्सर दिखता है।
वो शख्स एक रोज 'मैं खुश हूँ' की तख्ती लगाये।
चेहरे पर 'निश्चिंत मुस्कान' का पेन्ट कराये।
संग दिल, तंग कपड़े उस पर सेन्ट लुढ़काये।
मुझे मिला
झट से गले लगाया।
हाथ मिलाया।
मैं हतप्रभ कुछ सकुचाया।
न उसके सीने से धड़कनों का सम्वाद।
न हाथों में गर्म जोशी।
उसके शब्द् और भाव असंगत
निरजीव आँखों में अस्वागत की झलक।
मैं निहारता रहा उसे अपलक।
वो जानी पहचानी भीड़ का बहुत बड़ा हिस्सा है।
किसी एक का नहीं उन सबका किस्सा है।
वो शख्स जिसे जहान अपना समझे
आज बहुत अजनबी सा लगा मुझे।

♦

आत्मनिर्भर

एक शाम किसी ने दरबाजा खटखटाया।
पर मैं पहचान न पाया।
अदृश्य आवाज आई
मैं पड़ोसी हूँ भाई
मैंने पूछा – दिखते क्यों नहीं हो?
आवाज आई।
मैं आत्म निर्भर हो गया हूँ।
मैंने आदर से पूछा, मास्क तो लगाये हो
बोला, आत्मा अजर अमर होती है।
अब मैं हर दोष मुक्त हो गया हूँ।
मैं आत्मनिर्भर हो गया हूँ।
कैसे हुआ ये सब? आवाज में दर्द जवाब –
बेरोजगारी, महंगाई, भुखमरी और महामारी।
गहरी खामोशी और फिर
बेतन न मिलने से मैं बे तन हो गया हूँ।
मैं आत्मनिर्भर हो गया हूँ।
पर अब काम कैसे चलता है?
दबी हँसी में बोला –
जैसे जीरो – बैलेंस पर बैंक अकाउंट चलता है।
वैसे ही जीरो बैलेंस पर मेरी जिन्दगी चल रही है।
न याद रखने वाले शहीदों से जुड़ गया हूँ
मैं आत्मनिर्भर हो गया हूँ।
किसी शाम तुम भी मेरे घर आओ।
बड़ा मन करता है बीते वक्त में डूब जाने का।
बस यही सिलसिला है, जमाने का
मैं आत्मनिर्भर हो गया हूँ। ♦

तू मेरा मन

तू उपवन हुई
तो मन मोर हो गया।
काली रात एक
सुनहरा भोर हो गया।
ख़्वाब बेचैन हुये तो पलकों से यादें झांकने लगीं।
पतझड़ की डालियाँ छुपके बसंत को ताकने लगीं।
जीवन का शोर
एक संगीत हो गया
तू उपवन....
घोंसलों में सिमटेगा दिल का परिन्दा और कब तक
तेरा इशारा जब मिला आजाद हो गया।
लाज से पर्दों में लिपटी कलियाँ लाल हुईं।
गुजरा जो भी उधर से वो भँवरा हो गया
तू उपबन .....
दरिया में रवानी तेज हुई
जिसको छुआ वो किनारा हो गया।

♦

अगर चल पड़े

अगर चल पड़े हो तो
फिर क्यों रुक जाना
पीछे अगर कुछ छोड़ दिया
तो आगे है पाना।
दुश्बार रास्ते राही को कब रास आते हैं।
यह क्या कम है कि मंजिल तक पहुँचाते हैं।
घायल पाँव से घर वापस जो जाओगे
माँ को दिया बचन कैसे निभा पाओगे।
राही अगर हारता है तो राहें भी हारी
जो मंजिल तक नहीं पहुँचती
वो राहें बे-राहें कहलातीं
और गुमनामी में खो जाती हैं।
दरिया से पानी पीना।
पेड़ तले सुस्ताना।
सूरज तेरे साथ चलेगा
चन्दा सारी रात चलेगा।
तारों का मानचित्र है
फिर कैसा घबड़ाना
बाट जोहती मंजिल तेरी
उसको गले लगाना।
अगर चल पड़े....

♦

बगिया बसंत को दिल दे बैठी

मौसम के संग-संग
पत्तों के रंग
फूलों के ढंग भी बदले।
वो आँखें जो नजर चुराये
अब पलक बिछाये बैठी।
ऐसा क्या है मौसम में
जो तन-मन लुटा बैठी।
लगता है
बगिया बसंत को दिल दे बैठी
तार-तार चूनर पतझड़ में
हवा में ठिठुरी, कोहरे में दुबकी
बगिया तन ढकने को बैठी
बगिया .....
नये कपड़ों का बक्शा खोले,
सोच में डूबी।
हरी-गुलाबों, पीली नीली किस रंग की
मैं चूनर ओढ़ूं
थक कर किया, समर्पण बसंत को
तेरा रंग, तेरी मर्जी
जो चाहे वो चूनर डाले
मैं तन ढकने को बैठी
लगता बसंत को दिल दे बैठी
बगिया....

♦

मेरे पंख

बादल मेरे पंख बने
उड़ूं हवा के संग
धरती देखूं गगन निहारूं
देखूँ मैं दुनिया के रंग।

दरिया के ऊपर से गुजरा
पानी में एक हमशक्ल है, उभरा।
मेरा चिन्तन करता भंग।
लहरों के संग उछल-कूद कर
मुझको करता पल-पल तंग।।
बादल....
आगे देखा रेत का सागर,
उसके अपने ढंग
नीचे मेरे काली छाया
दौड़े मेरे संग
मौन हो गया सोच में डूबा
क्या मेरा जीवन काला है?
क्या सचमुच हम दो होते हैं
ऊपर उजले-अन्दर काले।
सच तो झूठ की लड़ता जंग।
पर्वत की बस्ती से उड़ना
टकराना तो निश्चित है।
कब तक बचता,
बिखर गया मैं भी पानी बन,
जिस मिट्टी से चला था भू पर

उस मिट्टी में सिमट गया मैं
टूटा सपना, जागा- आँसू के संग
इस 'जहान' के देखे तूने सारे रंग
धरती देखूँ गगन निहारूँ
देखूँ मैं दुनिया के रंग।

♦

थका हूँ हारा नहीं

न जाने ये कैसी कहानी हो गई
जिन्दगी न खतम होने बाली रात हो गई
जीने की वो अदा जाने कहाँ खो गई
अब बस
मास्क?
मोबाईल
और मानसिक यातना रह गई
वही पेंटिंग देखते-देखते आँख थक गई
न पलटने से जिन्दगी एक
जली रोटी
गला पान
और न जाने वाला मेहमान हो गई।
जिन ख्यालों में डूबने को वक्त चुराता था कभी
उसमें इतना डूबा कि हर साँस बेदम हो गई
जिन्दगी न खत्म होने वाली रात हो गई
रोशनी का एक कतरा भी
दुश्वार रास्तों को आसान बना देता है।
हर राहगीर का हौंसला बढ़ा देता है।
हाँ थकना वाजिब है सफर में 'जहान'
लेकिन न हारना, हौंसला बढ़ा देता है।

♦

मेरा सावन कब आयेगा

टपके टटिया टूटी खटिया
और वर्षा से भींगी रातें
चुल्हा गीला
आटा भीगा
(बकरी और मेमना करे बिलाप)
डिब्बी की लौ थर-थर कांपे
फूली साँसें पल-पल हाफें।
झुर्री में लिपटा एक चेहरा
थकी हुई दो आँखें।
काले गड्ढ़ों से झाँकें
बर्षा की बूँदों का तांडव
थाली लोटा-पीटे
गाय रम्भाये शोर मचाये
बूढ़ा नीम न कुछ कर पाये
वर्षों से बस यही (कामना) प्रश्न है
मेरा सावन कब आयेगा।

♦

मैं डाकिया

मैं कविताओं का झोला
हूँ डाकिया भोला भाला
कुछ शब्दों का सहारा
लेकिन दूर तक इशारा
जैसा देखूं बैसा बोलूं?
नीला-पीला भूरा काला
खट्टा-मीठा खारा चटपटा
सुनने बालों को लगे अटपटा।
साहित्यकारों की बारीकियाँ
साहित्य कारों के हवाले
मेरे झोले में सीधे साधे
शब्दों के माले।
सुख-दुख सब तेरे हवाले।
गली, मुहल्ले, गाँव, शहर का बनजारा।
कभी पेड़ की छाँव पुकारे,
कभी गाँव का पनघट प्यारा
खेतों की पगडंडी पर चलता
राह दिखाये चन्दा न्यारा।
साहित्य की इस तेज दौड़ में,
जो पीछे, छूट गये, बिछड़ गये
और रूठ गये
उनका मेरे पास हवाला
ये 'जहान' तो खबरों का मिर्च-मसाला
मैं डाकिया भोला-भाला।

♦

मदारी

डमरू मदारी का बड़ा करिश्माई होता है
सुनने बाला अपनी सुध-बुध खोता है।
कपड़े का कबूतर उड़ेगा ऐसा समझाता है
जिनको लूटता उन्हीं से ताली बजवाता है।
डमरू रुका तो गिरा खिलाड़ी।
ताली, रुकी तो गया मदारी।
भर ली उसने सिक्कों से थाली।
और बोला बजाओ ताली।
हर बार भीड़ से नया जमूरा लाता है।
अपने गुर्गों से जेबें भी कटवाता है।
कल नया खेल ले आयेगा,
सब कुछ वही करवायेगा।
फिर भर लेगा, अपना झोला
तुमको झोला दे जायेगा।
बातों का जादू जब तक बरकरार है
तब तक उसकी जय-जय कार है
बही मदारी आता बारंबार।
लुटने वाला फिर लुटने को तैयार।
लूटने वाला आता बारंबार

♦

जिन्दगी जवान है

जिन्दगी अगर जीती है तो जवानी
न बचपन का लड़कपन
न बुढ़ापे की हैरानी
न बीते कल
न आने वाले कल की चिन्ता
बस आज की अपनी कहानी जिन्दगी.....
बुढ़ापे से भी जवानी करती है छेड़खानी
दिमाग की चौखट झांकती
दिल के दरवाजे थपथपाती।
पर बुलाने पर ठेंगा दिखाती जिन्दगी....
साहिल भले ही आपस में करे खींचा तानी।
जवां दरिया को केवल पसंद अपनी रवानी।
गुजर गया वो समझा नहीं
जो आयेगा वो समझना नहीं
क्या फर्क पड़ता, हो आंधी, तूफान
या बरसे पानी। जिन्दगी.....
होली, इर्द, दिवाली क्रिसमस मनाये दुनिया
मुझे तो 14 फरवरी ही है मनानी।
फूलों के गुलदस्ते, दिलों के पोस्टर
वो रास्ते, सड़कें, लव मेट्रो 18 रोज आनी जानी
मॉल, कॉफी शाप, सिनेमा हाल, हाथ में हाथ
और वो हथेली जानी पहचानी जिन्दगी....

♦

परिन्दे खो गये

पत्ते खामोश हैं
सजर उदास
शायद परिन्दे चले गये
अगर रूठ गये तो चलो
मना कर लायें।
तिनका तिनका सजायें।
नया घोंसला बनायें।
मखमली घास का बिस्तर
उनकी रसोई और पनघट बनायें।
उनके गीत फिर सुने और गुनगुनायें।
आओ उनको मना कर लायें।
जंगल में शंखनाद, ये कोलाहल कैसा।
क्या चेतावनी है? एक आवाज आती है।
अरे मूर्ख इन्सान।
बन्द करो अपना अत्याचार
बदल दो अपना व्यवहार
अबकी बार गये तो फिर न आ पाओगे
नहीं तो तुम भी समाप्त हो जाओगे।
तू कुछ अनोखा बनाने में
अनोखी दुनिया को मिटा रहा है।
मैं इस संसार में तुझसे पहले आया हूँ
मैंने कितनी बार जीवों को बनते बिगडते देखा है
न समझा तो तू भी लुप्त हो जायेगा।
परिन्दों की तरह।

♦

बूढ़ा पेड़

नये मौसम के नये पत्ते मुझे जवान बना देते हैं
वैसे तो मैं बूढ़ा हूँ पर बुढ़ापे का एहसास मिटा देते हैं
मैं शुकगुजार हूँ परिन्दों का जब मैं थक जाता हूँ
तो लोरी गाकर सुला देते हैं
बागवान तो अब नहीं आता
न पानी देता, न खाना खिलाता
क्योंकि मैं बूढ़ा हो गया हूँ
बहुत एहसान है तमाम जीव जन्तुओं का
जो खुद तो अकेले हैं! पर पास मेरे आकर
मेरा अकेलापन मिटा देते हैं।

♦

मेरा गाँव आज भी गाँव है

आँगन में बकरी
चबूतरे पर नीम की छाँव है।
गली में गुट्टी खेलते बच्चे
छप्पर पर कउवा की काँव-काँव है।
मेरा....
दादी के टूटे खटोले पर
नाती पसारे पाँव हैं।
कसवा जाने की दरिया पार कराती नाव है
गज्जू ठाकुर के हाथ में लाठी
और मूछों पर ताव है।
मेरा....
लालटेन की पीली रौशनी
चूल्हा जलाने की फूंकनी
माथे पर पसीना, आँखों में आँसू
पर चेहरे पर मुस्कान
घर में माँ की दुआ की छाँव है।
मेरा.....
पनघट महिला क्लब है
बाग, बच्चों का क्रीड़ा स्थल है
तालाब जानवरों का स्नान घर
बम्बा की टूटी पुलिया बुर्जुगों का ठाँव है।
मेरा....
चार बच्चे फिर भी रानी भाभी के भारी पाँव हैं
सीधी सच्ची बातें कोई छल न दाँव है
बाबा की झोपड़ी में हुक्के, बीड़ी, चिल्लम की महफिल

शाम को किस्से कहानी सुनने का चाव है।
मेरा....
जानवरों की घण्टी की झुन-झुन
जोशी को 'एकतारा' की टुन-टुन
सावन में आल्हा, कजरी की धुन
सबमें प्रेम, कोई नहीं अनबन
मेरा गाँव....
इन्तजार करती पगडंडी
मोटा काजल, बालों में बहता तेल
हाथ में बस्ता, रस्ते में गुल्ली-डंडा का खेल
और आराम के लिये बरगद की छाँव है।
मेरा गाँव....
यौवन की दहलीज पर सपने संजोये
आइना देख रोज घर से निकलती
छत पर बैठ रेडियो के फरमाइसी गीत सुनती
मेला न जाने को, माँ ने रोके पाँव हैं।
मेरा गाँव....
कल्लू फौजी हो गया
गोलू शहर में पढ़ने जायेगा
चुन्नी स्कूल जाने की जिद करती है
लेकिन दादी मना करती
माँ मौन और बेबस है।
वक्त से जूझता बाप परेशान है।
मेरा....

♦

जीवन संगीत

जिन्दगी हारने-जीतने की होड़ नहीं है।
कम और ज्यादा का गठजोड़ नहीं है!!
जितना तेरे पास है उतना ही सही है।
ज्यादा भरेगा तो कस्ती डूब जायेगी।
खाली रही तो बहक जायेगी!!
जिन्दगी एक संगीत है।
हर शख्स एक साज है।
उसकी एक अपनी आवाज है।
उस आवाज पर उसे नाज होना चाहिये।
दूसरों की लय से अपनी लय मिलाओगे!
तो बेसुरे हो जाओगे!!
जिन्दगी तो बेसुरी नहीं है।
जितना तेरे पास है - उतना ही सही है।
किस-किस के पीछे दौड़ेगा - थक जायेगा।
आगे-पीछे की नाप-तौल में अपना वक्त गंवायेगा।।
जो भी था तेरा वो भी लुट जायेगा।
लुटना-लूटना जीवन की जंग नहीं है।
जितना तेरे पास है, उतना ही सही है!!
मंजिल न मिलने पर भी मुस्कान,
यही तो जीवन संगीत है 'जहान',
रास्तों पर चलने वाला ही बनता है महान।

♦

वक़्त जीना चाहता है

वक्त भी जीना चाहता है।
दिन-रात मेहनत कर अपने दो बच्चे
सुबह-शाम वो पालना चाहता है!!
सुख-दुख के सागर में डूबता-उतराता
हर रिश्ता निभाना चाहता है।
वक्त.....
कभी हँसा, कभी गाया, कभी रूठा, कभी रोया।
जिन्दगी के हर साज पर गीत गुनगुनाना चाहता है।
अच्छा भी है, बुरा भी है, नाराज भी होता है।
बस जिद्दी है जरा सा।
पसंद न आये तो खिलौना तोड़ देना चाहता है।
और अगर भा जाये तो कंधे पर बिठाना चाहता है।
वक्त....
थकता ज़रूर है, पर रुकना नहीं चाहता है।
उसने भी हर मौसम में जीना सीख लिया है,
वो भी, अपने वक्त के हाथों में सब छोड़ देना चाहता है
हर वक्त जीना चाहता है।

♦

वाह रे इन्सान

प्रकृति को समझने में नाकाम।
फिर भी कहता अपने को महान।
सूखा हो, बाढ़ हो महामारी
हर दुशवारी उस पर भारी।
चेहरे पर झलकती लाचारी।
फिर भी कहता अपने को महान।
पाखंड और झूठ का बागबान
हर बाजार में बेचता ईमान।
छाती पीटता शोर मचाता
करता अपने ही गुणगान।
वाह रे इन्सान।
चेहरे उजले दिल काले
उस पर नकली मुस्कान।
झूठ के जलसे और
सत्य का अपमान।
संकोच नहीं कहने में
खुद को भगवान।
प्रकृति को समझने में नाकाम
फिर भी कहता अपने को महान
वाह रे इन्सान।

♦

मिल जाये तो क्या बात है

भूखे को थाली
शराबी को प्याली
नेता को ताली
पंछी को डाली   मिल....
ग्रहस्थ को अच्छी घर वाली
जीजा को साली
श्रृंगार को लाली
उपवन को माली   मिल....
बहते पानी को नाली
चोर को रात काली
वाहन को सड़क खाली
जानवर को हरियाली   मिल....
प्रेमी को एकांत गली
मनचलों को मनचली
दुलहन को सास भली
दुल्हे को रात ढली   मिल....
मरीज को दवाई की गोली
देवर-भाभी को होली
कहार को बिदाई के डोली
सावन को कोयल की बोली
मिल जाये तो क्या बात है?

♦

कैसा सावन बिना पिया के

कैसा सावन बिना पिया के।
जैसे अंगना बिना दिया के!!
तप्ती काया छन-छन बोले
जैसे पानी जलता चूल्हे से!
कंगन करधनी हो गई ढीली।
अब पानी-गागर फिसले कूल्हे से!!
जैसे पीऊ-पपीहा बोले, बिन बादल के।
कैसा.... बिना पिया के!!
चौखट पर जब आहट आये
धक-धक छतियाँ धड़कें।
डर के मारे थर-थर कापूँ अंग लगूँ मैं किसके।
कैसा.... बिना पिया के!!
पीला पड़ गया चेहरा मेरा। मैं ऐसी कुम्हलाई
जैसे फसल बिना पानी के।
सारी रात चली पुरवाई। पोर-पोर मेरा दर्द से कसके
जब-जब लूँ अँगड़ाई!!
सखियाँ मेरी झूला झूलें।
अंगना बैठी मैं अकुलाई!!
झूला सूना डोरी सूनी। मेरी पकड़े कौन कलाई!!
कौन मिटाये हूक हिया की।
किस संग खेलूँ खेल जिया के!!
कैसा..... पिया के!!
दिन अनमने, सूनी दुपहरिया, काली रात डराये।
बादल गरजे, बिजली चमके।

तेज हवा कुंडी खटकाये।
इधर उधर मैं झाँकूँ डर के!
कैसा सावन बिना पिया के!
जैसे अंगना बिना दिया के!!

♦

पाठशाला

जिन्दगी एक पाठशाला, रोज सीखना सिखाना
जब दिल ही न मिले तो क्या हाथ मिलाना
कितना कठिन है,
एक गलत रिश्ता बनाना
उतना ही कठिन है,
एक गलत रिश्ता निभाना
कितना बेमानी है नकली आदर दिखाना
न चाहते हुऐ भी हंसना हंसाना।
जब दिल न मिले तो क्या हाथ मिलाना
दुसवार हो जाता है एक साथ रोना और मुस्काना

♦

जीवन वृत्त

हँसती खेलती खिलखिलाती जिन्दगी
चिड़ियों सी चहकती, फूलों सी महकती जिन्दगी।

जीवन के हर साज पर थिरकती जिन्दगी
हर मंजिल पाने को आतुर जिन्दगी।

आँधी तूफान, धूप, बरसात को ललकारती जिन्दगी।
दरिया, पहाड़, सागर को लाँघती जिन्दगी।

हर कदम पर सोचकर चलती जिन्दगी।
दिल-दिमागी जंग में उलझती जिन्दगी।

थक चुकी पर जीने की डोर थामे जिन्दगी।
बीते वक्त की यादों की पोटली जिन्दगी।

जिन्दगी ही जिन्दगी से पूछती क्या है? जिन्दगी
बस इस बात पर मुस्करा देती है, जिन्दगी।

♦

बस अब

शाम ढल चुकी सूरज को डूब जाना है।?
रास्ते अनजान और दूर हमें जाना है।

हर साँस में नई आशा-निराशा जाग जाती है।
लेकिन वक्त की रेत मुट्ठी से फिसल जाती है।

हर पल घटता-बढ़ता है जिन्दगी का हौंसला।
डूबता, उतराता पीछे छूटता यादों का काफिला।

वो कितने करीब आये और दूर निकल गये।
हम कितनी बार लड़खड़ाये और फिर संभल गये।

थके रात के तारों संग इधर डूबता पीला चाँद।
उधर भौर में नन्हे सूरज के आने का नाद।

बस अब छोटी-छोटी खुशियों से गुलदान बनाना है
आते-जाते हर पल को हँसकर गले लगाना है।

♦ ♦ ♦